अमृत विचार
लोक दर्पण
रविवार, 25 फरवरी 2024
www.amritvichar.com

विरासत का नायाब तोहफा हैं विंटेज कारें

महेश शर्मा
कानपुर

बात थोड़ी पुरानी है। कोई 2014 के आसपास की। कानपुर के सिविल लाइन पॉश एरिया का एक पार्क जश्न से सराबोर था। सड़क पर लाइन से काफी संख्या में कारें खड़ी थी। पता चला कि यहां विंटेज कार रोल्स रॉयस की 100 वीं वर्षगांठ है। शहर की जानी-मानी हस्तियां यहां पर जमा हुईं थी। केक काटा गया। यह विश्व की पहली रोल्स रॉयस कार बताई गई। इसके मालिक तारिक इब्राहिम को बधाई देने वालों का तांता लगा था। एंकर बनी एक स्कूल की संचालिका राधिका भूषण माइक लिए घूम-घूमकर इस कार का इतिहास बता रही थीं। उन्हें मजा आ रहा था, क्योंकि सुनने वाले इस इतिहास में काफी दिलचस्पी ले रहे थे। केक का टुकड़ा मुंह रखकर सजी-धजी खड़ी बूढ़ी हसीना रोल्स रॉयस के साथ लोग फोटो खिंचाने को तत्पर दिखे।

मेजबान तारिक इब्राहिम ने मेहमानों के लिए खास व्यवस्था कर रखी थी कि कार के साथ उनकी फोटो वहीं पर लिफाफे में रखकर सौंप देते थे। महफिल का लुत्फ उठाते हुए लोग लंच लेकर रुखसत हो रहे थे। यह बर्थ डे पार्टी चार बजे तक चली। कानपुर में इन कारों का आज भी क्रेज है। इस रोल्स रॉयस के विषय में बताया जाता है कि पहले खेप में सात रोल्स रॉयस का उत्पादन हुआ था। प्रथम विश्व युद्ध के दौरान छह को मॉडिफाइड करके बख्तरबंद गाड़ियां बना दी गईं थीं और बची एक को तारिक इब्राहिम के पुरखे फिरंगियों से रिश्तों के चलते लंदन से खरीदकर भारत ले आए। यह कार आज उनके घर की शोभा है। विंटेज कारों के कद्रदान मुलायम सिंह यादव के सैफई गांव में भी जब तब रैलियां होती थीं तो वह इसी कार में बैठकर लुत्फ उठाते थे।

विंटेज कार रखने के शौकीन मेडिकल कालेज के रिटायर्ड प्रोफेसर डॉ.एएम जैन और उनकी पत्नी प्रोफेसर नीता जैन तो जब तब फर्राटा भरते देखे जाते हैं। इस कपल को कई बार बेस्टकपल का अवार्ड भी मिल चुका है जिसका काफी कुछ श्रेय उनके विंटेज कार लव को जाता है। तारिक बताते हैं कि कानपुर तो यूपी में विंटेज कारों का गढ़ है,पर अब यह धीरे-धीरे सिकुड़ता जा रहा है। पार्किंग और रख रखाव की दिक्कत के कारण लोग कारें बेंच रहे हैं। फिलहाल कोई करीब 30 विंटेज कारें कानपुर में हैं। वह बताते हैं कि टीएस जौहर ने अपनी विंटेज कार फोर्ड ए-1928 दिल्ली में किसी को दे दी है। इनके रखरखाव व पार्किंग को लेकर दिक्कतें बढ़ रही हैं। तारिक की रोल्स रॉयस का मैकेनिक रिपयेरिंग

को इंग्लैंड से आता था। उसकी मृत्यु हो गई तो अब मुंबई से एक मैकेनिक आता है। ऐतिहासिक कार की चर्चा में तारिक इब्राहिम कहते हैं कि वह रोल्स रॉयस सिल्वर घोस्ट को लेकर कोलकाता तक कार रैली में भाग लेने जा चुके हैं। उनके परिवार ने चार पीढ़ी पहले इंग्लैंड से 12-सिलेंडर, 7700-सीसी मॉडल आयात किया था। इन कारों को दिल्ली ले जाते समय, इन्हें चलाने के लिए अनुमति लेनी होती है। ब्रिटेन और अन्य देशों में ऐसी कारों को टैक्स से छूट मिलती है। इब्राहिम ने एक और मुद्दे की ओर इशारा किया कि इस बेशकीमती संपत्ति का व्यापक बीमा नहीं करवा सकता। उन्होंने पहियों पर अपनी सुंदरता के उभारों को सहलाते हुए कहा। तो मुझे एक तीसरी पार्टी खरीदनी होगी। कानपुर में लाखों कारें हैं,पर जब ये बूढ़ी हसीनाएं सड़कों पर

आठ विंटेज कारें रखने वाले तारिक इब्राहिम कहते हैं कि मुंबई की तर्ज पर यूपी सरकार यदि सब्सिडाइज्ड रेट पर जगह उपलब्ध कराए तो कानपुर की विंटेज कारें रखी जा सकती हैं। यह भी एक प्रकार का टूरिज्म है। कानपुर कायाकल्प का हिस्सा हो सकता है। सारा मेंटीनेंस हम लोग संभाल लेंगे। मुंबई मे ऐसा ही संग्रहालय बना है,जो लोगों के आकर्षण का केंद्र है। वह कहते हैं कि रखने की जगह न होने से लोग कारें बेच रहे हैं। ग्राहक तलाश रहे हैं।

-तारिक इब्राहिम

इठलाती,बलखाती सड़कों पर निकलती हैं तो लोग एकटक निहारते रह जाते हैं। डॉ. एएम जैन की एक विंटेज कार पेट्रोल भरवाने मेडिकल कॉलेज पेट्रोल पंप पहुंची पर तकनीकी खराबी के कारण बमुश्किल स्टार्ट हो पाई थी। कारों की दुनिया में विंटेज युग एक परिवर्तन काल था,जो अब टूटी उखड़ी सांसों पर टिका है। बताते हैं कि कार की शुरुआत 1919 में एक दुर्लभ वस्तु के रूप में हुई और 1930 तक पहुंचते-पहुंचते यह काफी कुछ आम होने लगी थी। वास्तव में इस अवधि के अंत तक हुए ऑटोमोबाइल उत्पादन को 1950 के दशक तक पुनः हासिल नहीं किया जा सका था। अनुभवी मैकेनिक और असली स्पेयर पार्ट्स ढूंढने के लिए उन्हें संघर्ष करना पड़ता है और उस मूल तेल टोपी या दर्पण या दरवाजे के हैंडल को न पाने का दर्द जोरदार और स्पष्ट है। एवरेज भी कम। विंटेज कार प्रेमी रॉकेट बॉयज और जुबली जैसी हिस्टोरिकल वेब सीरीज पर बातचीत करते हैं जिसमें चमचमाती विंटेज कारें देख कर किसी के भी मन में सवाल आता ही होगा कि ये गाड़ियां अब कहां मिलती हैं? कौन है वो जो इतनी पुरानी गाड़ियों को संभाल कर रख रहा है? इन सवालों के जवाब कानपुर के डॉ एएम जैन, तारिक इब्राहिम, विवेक भाई एडवोकेट जैसे लोगों से मिलने पर मिल जाएंगे। ये लोग स्वरूप नगर क्षेत्र की शान के रूप में जाने जाते हैं। ऐसी कारों के मालिकों ने विंटेज कार क्लब ऑफ कानपुर बनाया है। इसमें विंटेज फील के लिए कानपुर की स्पेलिंग CAWNPORE का प्रयोग किया है। यह संस्था विंटेज कार रैली की आयोजक हुआ करती है।

सबसे पुरानी विंटेज कार रैली

स्टेट्समैन विंटेज और क्लासिक कार रैली पिछले 55 साल से आयोजित की जा रही है। इसी प्रकार सैल्यूट इंटरनेशनल रैली (2018) और कान्कर्स में देश भर के सांस्कृतिक प्रदर्शनों के बीच 100 पुरानी कारों के प्रदर्शन का दावा किया गया है। डॉ. जैन कहते हैं कि लोग देखने आते हैं तो इसे विंटेज कार टूरिज्म के रूप में विकसित किया जा सकता है। बताते हैं कि दिल्ली के बाहरी इलाके में तीन एकड़ क्षेत्र में फैला हैरिटेज ट्रांसपोर्टेशन म्यूजियम है, जो पहिए से लेकर पूरे परिवहन के इतिहास को प्रदर्शित करता है। एक और बात पता चली है कि ऐसी कारों के शौकीन घटे नहीं हैं, पुरानी कारों के दाम भी बढ़ रहे हैं। पांच साल पहले, आप पांच लाख रुपये में एक विंटेज कार खरीद सकते थे और इसमें कोई समस्या नहीं होती थी,लेकिन अब दिक्कतें बढ़ी हैं।

जब एनजीटी का रुख हुआ टेढ़ा

कोई नौ साल पहले 2014 में नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल ने 15 साल से अधिक पुरानी सभी कारों पर प्रतिबंध लगाने का आदेश जारी किया था, विंटेज और क्लासिक कारों को कोई अपवाद नहीं दिया। इसने किसी भी सरकारी प्राधिकरण को अदालत के विशिष्ट आदेश के बिना इन वाहनों को फिटनेस प्रमाणपत्र जारी करने से भी रोक दिया। कई क्लबों को विशेष छूट नहीं मिली है,जो किसी कार्यक्रम के लिए कारें निकालने के लिए आवश्यक होती है। इसलिए अच्छे मौसम में अपनी कारों को सड़क पर निकालने का सारा मजा बंद हो गया है। इन कारों को न चलाने से इनमें खराबी आ सकती है। ये देश की विरासत हैं। तारिक कहते हैं कि विंटेज क्लब और कारों के मालिक एक साथ जुटकर विंटेज कार म्युजियम की मांग करें। देश की विरासत को बचाने का अच्छा अवसर है। सरकार जरूर सुनेगी।

मॉडिफाइड विंटेज कारें

मुंबई के साजिद और अकबर मियां एक वर्कशाप के मालिक हैं,जहां पर ओरिजनल नहीं मॉडिफाइड विंटेज कारें मिलती हैं। ये पुरानी कारें खरीदते हैं। फिर मॉडिफाई करके फिल्मों में शूटिंग आदि के लिए दिया करते हैं। बताते हैं कि दोनों अब तक 100 से ज्यादा कारें मॉडिफाइड कर चुके हैं। कई फिल्मों और वेब सीरीज में इनकी कारें प्रयोग की जा चुकी हैं। सलमान खान से लेकर जैकी श्रॉफ तक इनकी मॉडिफाई की गई कारों के फैन हैं।

महंगा चस्का है पर लोग पसंद करते हैं

विंटेज एंड क्लासिक कार क्लब ऑफ इंडिया के सदस्य विंटेज एवं क्लासिक कारों के शौकीनों का क्लब है जिसकी शुरुआत 1963 में हुई थी। इसके 160 सदस्य हैं। इसी तर्ज पर कानपुर में इसकी ब्रांच गठित की गई। 'विंटेज कारें' क्या हैं और क्या वे 'क्लासिक कारों' के रूप में जानी जाने वाली कारों से भिन्न हैं? नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल के मुताबिक, 1920 से 1939 के बीच बनी किसी भी कार को विंटेज कार और 1940 से 1979 के बीच बनी कार को क्लासिक कार कहा जाता है। संग्रहकों की पुस्तक में विश्व युद्ध से पहले और बाद की कारें भी होंगी जिनका निर्माण द्वितीय विश्व युद्ध से पहले और बाद में किया गया था।

कानपुर महोत्सव में होती है कार रैली

विंटेज कार रैली का आयोजन प्रायः कानपुर महोत्सव के दौरान किया जाता है। जहां गुजरे जमाने की करीब दो दर्जन से अधिक कारें मौजूद रहती हैं। इस दरौन इन कारों को देखने के लिए भारी संख्या में लोग आते हैं। इन्हें झंडी दिखाकर रवाना किया जाता है। इनके स्वागत को सड़क के दोनों किनारों पर लोग एकत्र हो जाते हैं। इन विंटेज कारों जिन्हें जुमलेबाज बूढ़ी हसीनाएं कहते हैं, कारों पर लोग रोचक प्रश्न उठाते हैं जिनके जवाब भी रोचक होते हैं। इनकी स्पीड तो ज्यादा नहीं होती है पर जलवा कायम है।

कौन सी कार और मालिक

कार	सन्	मालिक
रोल्स रॉयस	1913	तारिक इब्राहिम
रोल्स रॉयस	1913	यासिर इब्राहिम
फोर्ड पिकअप ए	1928	डॉ. इफ्तिखार
ऑस्टिन 7	1930	तनवी
मॉरिस एट	1932	डॉ. एएम जैन
फोर्ड एंजिला	1938	शाहिद मिर्जा
फोर्ड जीप	1942	मुशब्बिर नबी
फोर्ड जीप	1943	मो. ताहिर
ऑस्टिन जीएस टू	1948	रामेंद्र माथुर
विलीज जीप	1952	शाहिद मिर्जा

जानिए कुछ कारों की शोख अदाएं

- रोल्स रॉयस को रजवाड़ों की कार माना जाता है। इसमें बैठकर लगता ही नहीं कि आप किसी कार में बैठे हैं। सोफे जैसी सीटें और खिड़कियों पर पर्दे राजसी ठाठ बयां करते हैं। इस कार में जर्मन सिल्वर का प्रयोग हुआ है। लालटेन जैसी लाइटें लगी हैं। यह एक लीटर में एक किलोमीटर चलती है।
- फोर्ड पिकअप कार मछली के शिकार के लिए प्रयोग की जाती थी। इसमें लंबी-लंबी रॉड लगी हैं। इसका एवरेज सात या आठ किमी प्रति लीटर है। कहा जाता है कि इस कार का प्रयोग जंगल में शिकार करने में भी किया जाता था।
- ऑस्टिन 7 कार की छत हट जाती है। 1930 में ही इस कार में खड़े होने की सुविधा मिली थी। यह चार सीटर कार है।
- फोर्ड जीप कार का प्रयोग द्वितीय विश्व युद्ध में किया गया था। इस कार में एक विशेषता है कि इसे टायर निकालने के बाद रिम के सहारे रेल की पटरियों पर दौड़ाया जा सकता है।
- फोर्ड एंजिला कार को शाहिद मिर्जा ने लखनऊ से पांच-छह साल पहले कबाड़ी से पांच लाख रुपये में खरीदी थी। इस कार को कानपुर के किसी नवाब की माना जाता है। यह कार गदर फिल्म में दिखाई गई थी। इसका एवरेज 10 से 12 किमी प्रति लीटर है।
- विलीज जीप अमरेकिन कंपनी की कार है। अब नहीं बनती है। इसमें स्पेशल गियर हैं। कचरे या कीचड़ में फंसने पर चौथा गियर लगाने पर आराम से निकल जाती है।
- मॉरिस एट कार का इंजन आठ हॉर्स पॉवर का है। इसमें तीन गियर हैं। यह 12 किमी प्रति लीटर का एवरेज देती है। रामेंद्र माथुर ने यह कार 1978 में कबाड़ी से खरीदी थी। इसके पार्ट्स सिर्फ इंग्लैंड में मिलते हैं।

स्वदेशी तकनीक से विज्ञान गगन में चमकता भारत

प्रश्नों, जिज्ञासाओं एवं प्रयोगों ने सदैव विज्ञान एवं तकनीकी के क्षेत्र में नवीन आयामों को स्थापित किया है। विज्ञान हमेशा से गतिमान रहा है और इसकी गति के पीछे नए-नए प्रयोगों एवं परीक्षणों की निरंतरता उत्तरदायी है। 28 फरवरी 1928 भारत के इतिहास का वह स्वर्णिम दिन था जब किसी भारतीय वैज्ञानिक ने वैश्विक पटल पर भारतवर्ष को चमका दिया था। वो भारतीय वैज्ञानिक और कोई नहीं, सर चंद्रशेखर वेंकटरमन थे, जिन्होंने सात वर्षों के सतत परिश्रम प्रयोगों एवं प्रेक्षणों के आधार पर एक ऐसी घटना की खोज की जिसने कालांतर में अनुप्रयोगों की एक श्रृंखला को जन्म दिया। पारदर्शी माध्यम से एकवर्णी प्रकाश के गुजरने पर उसके प्रकीर्णन की व्याख्या करने वाली इस अद्भुत घटना को उसके खोजकर्ता के नाम पर 'रमन प्रभाव' कहा गया।

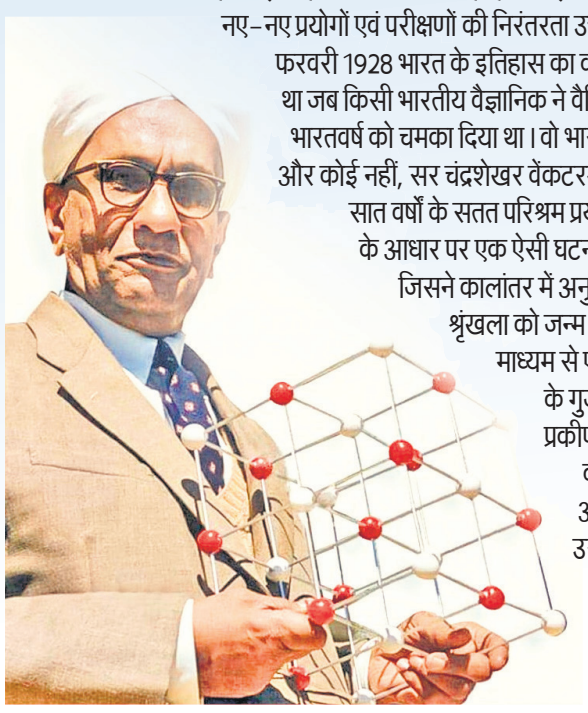

शिशिर शुक्ला
असिस्टेंट प्रोफेसर
शाहजहांपुर

भारत को विज्ञान का पहला नोबेल पुरस्कार भी वर्ष 1930 में रमन प्रभाव के कारण ही प्राप्त हुआ। वर्ष 1987 से 28 फरवरी को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की गई और तब से प्रतिवर्ष यह दिन विज्ञान को समर्पित होता आया है। हर साल इस दिवस विशेष का विषय (थीम) किसी विशेष विचार, भाव, लक्ष्य अथवा संदेश को व्यक्त करता है।

वर्ष 2024 के राष्ट्रीय विज्ञान दिवस की थीम- 'विकसित भारत के लिए स्वदेशी तकनीक' है। इसमें कोई दो राय नहीं है कि भारत आज प्रत्येक क्षेत्र में संपूर्ण विश्व को अपनी क्षमता एवं प्रतिभा का लोहा मनवा चुका है। बात अगर विज्ञान और तकनीकी के विषय में की जाए तो आज भारत की स्वदेशी तकनीकें ही सारी दुनिया में इसका परचम लहरा रही हैं। यह बात निराधार नहीं है,बल्कि हमारे सामने इसके ताजा उदाहरण मौजूद हैं। पहले उदाहरण के तौर पर पूरा विश्व गवाह है कि जब कोरोना वायरस का कहर पूरी दुनिया पर बरप रहा था और चीन व अमेरिका जैसे विकसित देश भी कोविड से हार मान बैठे थे,उस कठिनतम समय की चुनौती को भारतवर्ष ने सहर्ष स्वीकार किया और कोविड-19 से निजात पाने के लिए प्रभावी वैक्सीन को विकसित करके न जाने कितने पीड़ितों की जान बचाने में सफलता हासिल की और तो और भारत की वैक्सीन ने विश्व के अनेक देशों में पहुंचकर अपना कमाल दिखाया और मानव जाति पर मंडरा रहे संकट के बादलों को साफ किया।

दूसरा एक अति महत्वपूर्ण उदाहरण है- चंद्रयान मिशन। 14 जुलाई 2023 को सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र, श्रीहरिकोटा, आंध्र प्रदेश से प्रक्षेपित किए गए तृतीय चंद्रयान मिशन ने 23 अगस्त 2023 को चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर सफलतापूर्वक लैंड करके भारत के खाते में एक अभूतपूर्व उपलब्धि शामिल कर दी। दरअसल इस मिशन के साथ ही भारत चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर पहुंचने वाला विश्व का प्रथम देश बन गया। एक दिलचस्प बात यह है कि भारत का मिशन चंद्रयान-3 लांच होने के बाद 11 अगस्त 2023 को रूस की ओर से भी चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर सॉफ्ट लैंडिंग के लिए मिशन लूना-25 को लांच किया गया,किंतु यह मिशन चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव से टकराकर ध्वस्त हो गया और इस तरह रूस की प्रतिद्वंद्विता एवं चांद के दक्षिणी ध्रुव को फतह करने की लालसा धरी की धरी रह गई। यहां पर एक बात का जिक्र करना बेहद आवश्यक होगा कि हमने अंतरिक्ष मिशन में भी स्वदेशी तकनीक के बल पर ही सफलता अर्जित करके दिखाई है। जहां रूस ने कृत्रिम तकनीक का सहारा लेते हुए चांद की ओर उड़ान भरी,वहीं भारत ने प्राकृतिक नियमों के आधार पर ही और अपेक्षाकृत कम खर्चे में ही वही मिशन पूरा कर दिखाया। इसे एक उदाहरण की सहायता से समझा जा सकता है। मान लीजिए किसी पत्थर को बहुत दूर तक फेंकना है। इसके लिए पहला तरीका तो यह है कि पत्थर तो इतनी ताकत के साथ फेंका जाए कि यह अपने लक्ष्य तक पहुंच जाए। इस तकनीक का इस्तेमाल रूस के द्वारा लूना-25 को प्रक्षेपित करने में किया गया था। अब हम अपनी बात करें तो हम आदिकाल से ही प्रकृति में आस्था रखते हैं। प्रकृति को ईश्वर का दर्जा देते हुए

हमने सदैव उसकी पूजा की है। बदले में प्रकृति ने भी सदैव अपनी कृपा बरसाई है। उपरोक्त पत्थर वाले उदाहरण में अगर हम पत्थर को रस्सी से बांधकर उसे वृत्ताकार पथ पर घुमाएं और प्रत्येक चक्कर के बाद वृत्त की त्रिज्या और पत्थर की गति को बढ़ाते जाएं तो कुछ ही देर में पत्थर एक तीव्र वेग को प्राप्त कर लेगा। अब अगर पत्थर को यकायक उस दिशा में छोड़ दिया जाए जिधर उसे प्रक्षेपित करना है तो पत्थर बड़ी आसानी से लक्ष्य तक पहुंच जाएगा। चंद्रयान-3 के प्रक्षेपण में इसी सिद्धांत का प्रयोग किया गया है। पहले चंद्रयान को पृथ्वी के परितः प्रकृति जन्य गुरुत्वाकर्षण बल का प्रयोग करते हुए घुमाया गया और प्रत्येक चक्कर के बाद उसकी कक्षा की त्रिज्या बढ़ा दी गई। अंततः उसे आवश्यक ऊर्जा देकर चंद्रमा की ओर भेज दिया गया। सीधा सा मतलब है कि अधिकाधिक प्रयास प्रकृति के द्वारा अभिकेंद्र बल के रूप में किया गया। वस्तुतः भारत प्राचीन काल से ही विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का एक वैश्विक केंद्र रहा है। विज्ञान व प्रौद्योगिकी यहां की संस्कृति एवं परंपराओं के साथ जुड़ी है। खगोल, ज्योतिष, गणित, ज्यामिति, शल्य चिकित्सा आदि अनेक विद्याओं का उद्भव भारत में ही हुआ था। कुल मिलाकर निष्कर्ष यह है कि हमारी स्वदेशी तकनीकें आज पूरे विश्व में चमक रही हैं। यह बात पूर्णतया सत्य है कि जब तक विज्ञान एवं तकनीक प्रकृति के साथ जुड़े रहेंगे,वे निरंतर उत्तरोत्तर प्रगति की ओर कदम बढ़ाते रहेंगे। अभी हाल ही की बात करें तो मौसम के अनुमान एवं जानकारी के लिए भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन ने भारत के नवीनतम उपग्रह इनसैट-3 डी एस को लांच किया है। यह उपग्रह अलग-अलग स्पेक्ट्रमी तरंगदैर्घ्य के जरिए पृथ्वी की सतह, महासागरों, वायुमंडल एवं पर्यावरण पर निगरानी कर सकेगा। इस नवीनतम स्वदेशी तकनीक के जरिए मौसम की गड़बड़ी का पूर्वानुमान लगा पाना संभव होगा एवं किसी भी तरह की मौसमी आपदाओं से भी बचा जा सकेगा। वर्ष 2023 भारत के लिए वैज्ञानिक उपलब्धियों की दृष्टि से बेहद महत्वपूर्ण रहा है। विशेषकर अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में तो हमने सबको पीछे छोड़ दिया है। चंद्रायान-3 मिशन की सफलता के उपरांत सूर्य के अध्ययन हेतु रवाना किए गए आदित्य एल-1 मिशन ने भी सफलतापूर्वक लैग्रान्जे बिंदु पर निर्धारित समय में पहुंचकर अपना कार्य शुरू कर दिया। इसके अतिरिक्त स्वदेशी तकनीक एवं क्षमता का एक अन्य बड़ा उदाहरण गगनयान मिशन है। इस मिशन के माध्यम से भारत ने साबित कर दिया कि मानव अंतरिक्ष उड़ान मिशन की क्षमता भी उसके पास है। सार स्वरूप यह कहा जा सकता है कि भारत की स्वदेशी तकनीकें प्राचीनकाल में भी सर्वश्रेष्ठ थीं और आज भी सर्वोत्तम हैं। अगर आवश्यकता है तो इन तकनीकों को संरक्षित एवं संवर्धित करने की ताकि विज्ञान और तकनीकी के क्षेत्र में हम विश्वगुरु बने रहें।

कविता

भोजभेरी

ब्रह्म भोज की बजी दुंदुभी
ब्रह्म लोक में भारी।
रणभेरी के ध्वनि सुनकर
सुकड़ी सब्जी सारी।।
कौन अभागा आज कटेगा हुई
गुनातन नारी।
ब्रह्म कढ़ाई में झुलसेगी किस
सब्जी की बारी।।
पालक पानी पानी हो गई सोया
सिसक को रोया।
चौरई बड़ाई फिरती कुल्फा
धारा में सोया।।
बथुआ का नथुना भर आया
कटहल निकले कांटे।
तीखापन को कहा करेला काले
पड़ गए भाटे।।
आलू धरती में छिप बैठी गहे
सफेदी गोभी।
पत्तों में सुकड़ी पत्तागोभी जीवन
की अति लोभी।।
टट्टर पर लुक बैठा परवल गहे
टमाटर वाली।
कड़ुआहट मिरचा ले बैठा सब्जी
की जो साली।।
शलजम सुकड़ा गोला बन गया
धनिया हरियर पाती।
डर से मूली घुसी धरा में लौकी
सूखी छाती।।
नागरूप चितकबरा चिचड़ा देता
हरियर झंडी।
कुनरू का क्रेज सुर्ख भा
लिसलिसाइ गई भिंडी।।
जल में डूबा भाग करमुआ भूंई
में टिंडा।
साकेत नगर में न्याय खोजता
फैजाबादी बंड़ा।।
परत-परत में प्याज लपेटी मुंह
को काटे सूरन।
मंडली सब्जी खोजें जेब में
रखकर चूरन।।
भाई आतंकित लख समाज को
हंसकर बोला कोहड़ा।
भर को त्यागे रहो फेर दूंगा
ब्राह्मण का मोहड़ा।।

सरिता सिंह
लखनऊ

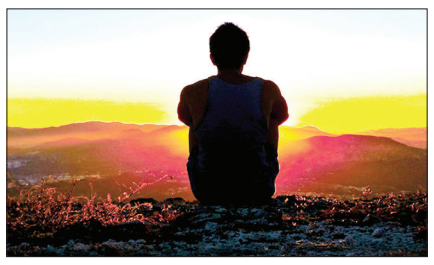

भग्नावशेष

मैं धीरे- धीरे
उसमें घुलता जा रहा था
और
खुश था कि उस जगह पर
मुझे दफन कर वहां
मेरे नाम की तख्ती लगा दी
गई थी
अब यही एक छोटा सा मेरा
साम्राज्य था
वर्षों गुजर गए
इसी तरह निश्चितता में और
सुख में
अचानक उस जगह पर
जहां मैं सोया हुआ था
अपनी यादों के सहारे
एक नए शख्स ने आकर
मेरे सामने
अपनी चुनौती पेश की
जिसे ठीक मेरे ऊपर
जल्द ही
दफन किया गया था
मेरे ऊपर
अब उसके नाम की तख्ती
लगा दी गई थी
उसके इस अप्रत्याशित
आगमन से
मैं घबरा गया
यह सोच कर कि इस जमीन
की तरह ही
कई लोगों ने
दूसरों को जगह दे दी होगी
और कुछ ने बलात
मेरे चाहने वालों के दिलों पर
जो कभी
सिर्फ मेरे लिए धड़कते थे
अपने नाम की
तख्ती लगा दी होगी
बिल्कुल
मेरे इस प्रतिद्वंद्वी की तरह
फिर भी
मुझे संतोष था कि मेरी तरह
अब मेरी यादों के
अवशेष भी नष्ट हो रहे थे
मेरे इतिहास के
कुछ काले और कुछ सुनहरे
पृष्ठ।

अमित अवस्थी
स्वतंत्र पत्रकार, बरेली

गजल

जिंदगी तुझसे शिकायत तो है।
हां मगर गम की इनायत तो है।।
मुझ में बाकी ये रिवायत तो है।
टूटी फूटी है इबादत तो है।।
बेच सकता नहीं इमान अपना।
माल ओ दौलत मेरी चाहत तो
है।।
है खुशी दूर बहुत दूर मगर।
दिल में पा लेने की चाहत तो है।।
गम ही गम है मेरी दुनिया में
मगर।
जिंदा रहने की इजाजत तो है।।
रहता फूलों में तो मारा जाता।
मेरी कांटो में हिफाजत तो है।।
डर है नाराज न हो जाओ कहीं।
वैसे इस दिल को शिकायत
तो है।।
बेवफाई भी है मंजूर हमें।
आपको हमसे मोहब्बत तो है।।
मुझको मंजिल नहीं मिलती
राशिद।
पाऊं को चलने की आदत तो है।।

राशिद हुसैन
इंजीनियर, मुरादाबाद

व्यंग्य

शिक्षा व्यवस्था में थप्पड़

बड़ी बात नहीं होती थी, थप्पड़ पड़ना। कभी कोई थप्पड़ जिंदगी भर के लिए हृदय में अंकित हो जाता है। कोई थप्पड़ पूरी जिंदगी ही बदल देता है। सवाल थप्पड़ की गूंज को देर तक महसूस करने या नकारने का है। एक समय था कि जब स्कूलों में थप्पड़ का प्रयोग किया जाना सामान्य हुआ करता था, तनिक सी शैतानी थप्पड़ से गाल लाल कराने का कारण बन जाया करती थी। कभी-कभी कक्षा अध्यापक कक्षा के मॉनिटर को थप्पड़ मारने का अधिकार सौंप देते थे और होशियार बच्चों से पढ़ाई में कमजोर बच्चों से थप्पड़ से पिटवाकर बच्चों में भय उत्पन्न किया करते थे। थप्पड़ का प्रयोग पूरी कक्षा के बालकों पर होता था, सो कोई बुरा भी नहीं मानता था। यह वह दौर होता था कि जब बच्चे मान अपमान की परिभाषा से परे हुआ करते थे।

घर में मोहल्ले में थप्पड़बाजी उनके लिए आम हुआ करती थी। उनकी भावनाएं भी थप्पड़बाजी से आहत नहीं हुआ करती थीं। असलियत यह भी थी कि बच्चे हाईटेक नहीं हुआ करते थे। दिन भर घर से बाहर रहते थे। गली में छुआछाई खेला करते थे। उस दौर में काले रंग के फोन मोहल्ले भर में गिने चुने हुआ करते थे, जिन पर बात करने की हिम्मत भी हर किसी में नहीं हुआ करती थी। थप्पड़ मारने या घायल करने के लिए प्रत्यक्षदर्शियों की गवाही के अतिरिक्त सबूत नहीं हुआ करते थे। अब हर तीसरे शख्स के पास सबूत एकत्र करने वाला यंत्र है। सावधानी हटी दुर्घटना घटी वाली तर्ज पर कब न जाने कौन थप्पड़बाजी के प्रमाण मोबाइल कैमरे में कैद कर ले और उसका प्रसारण करके छोटी सी घटना को विकराल रूप दे दे। कब वह प्रमाण सत्ता पर अक्षमता का आरोप लगाकर सत्ता को नकारा सिद्ध करने में जुट जाए। कब सत्ता अपने बचाव में आकर छोटी सी घटना के लिए विशेष जांच समिति का गठन कर दे और कब मामला अदालत के संज्ञान में चला जाए। एक थप्पड़ कब तिल का ताड़ बनकर समूची व्यवस्था को कटघरे में खड़ा कर दे, इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती।

सुधाकर आशावादी
सेवानिवृत्त प्रोफेसर

अब वह समय भी नहीं रहा कि जब अभिभावक अपने बच्चों को डरा धमका कर शिक्षा दिलाया करते थे। शारीरिक प्रताड़ना शिक्षा का अनिवार्य अंग हुआ करती थी। हाथ खड़े करके घंटों खड़े रहना, मुर्गा बनना, हथेलियों पर कमचियों के प्रहार सहना बालकों की नियति हुआ करती थी। उस समय यदि कैमरा लगे मोबाइल होते तो बच्चे अत्याचार भला क्यों सहते। किसी गांव में किसी प्राथमिक विद्यालय में पढ़ाई में कमजोर बालक को दूसरे बालकों से थप्पड़ लगवाने की सजा भले ही पिट पिट कर पढ़ना सीखो जैसी शिक्षण तकनीक का प्रतिनिधित्व करती हो, मगर मानवाधिकार आयोग की दृष्टि में ऐसी तकनीक कभी भी न्याय सम्मत नहीं मानी जा सकती। ऐसा नहीं है कि ऐसी शिक्षण तकनीक को अपनाना बंद कर दिया गया हो। थप्पड़बाजी चल रही है, किंतु मोबाइल के कैमरों में कैद नहीं हो पा रही है। यदि कैद हो रही है तो क्रूरता के पर्याय शिक्षकों को सबक भी मिल रहा है। अदालतें सख्त हैं। थप्पड़बाजी की घटनाओं का स्वतः संज्ञान ले रही हैं। खूब फटकार भी लगा रही हैं, मगर शिक्षा का स्तर पहले के मुकाबले सुधर रहा है या बिगड़ रहा है, इस पर किसी का ध्यान नहीं है। स्कूल थप्पड़बाजी रोकने पर ध्यान दें या शिक्षा का स्तर सुधारने पर, इस मामले में सभी चुप्पी साधने में ही भलाई समझ रहे हैं।

कहानी

प्यार की दास्तान

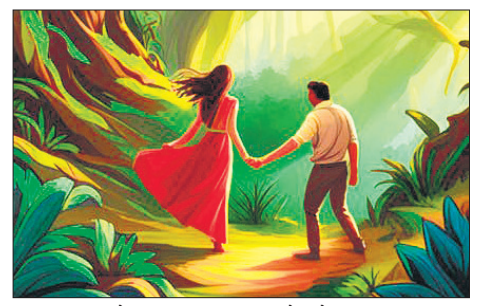

उसे शिकार का बड़ा भारी शौक था। यहां तक कि वह उसके सामने अपने मां, बाप, भाई-बहन और प्यारे प्राणों को भी कोई चीज नहीं समझता था। देश के बंटवारे के बाद उसके दादा उत्तर प्रदेश के तराई क्षेत्र में बस गए थे। उसके फार्म पर आदमियों की कमी नहीं थी। अगर वह चाहता तो शिकार को जाते वक्त एक की जगह कई आदमी ले जा सकता था, लेकिन उसकी आदत कुछ ऐसी पड़ गई थी कि चोर की तरह अकेले जाना ही उसे अच्छा लगता था।

एक दिन की बात है। गर्मी का मौसम था। पल-पल गर्मी बढ़ती जा रही थी और आदमी पानी-पानी चिल्लाकर अपने गले को और भी ज्यादा सुखाते जाते थे। वह नैनीताल की तराई में शिकार खेलने में व्यस्त था, जब उसे ढूंढते हुए डी.एफ.ओ आए। उनके मुंह से इस दुर्घटना का समाचार मिला। हरिया एक चरवाहा था, जो अपनी भेड़ों को चराते हुए नेशनल कॉर्बेट पार्क के किनारे घने जंगल में इस दुर्घटना का शिकार हुआ था। शाम को जब उसकी भेड़ उसके बिना गांव में वापस आ गई, तो हरिया के बूढ़े बाप का माथा ठनका। फिर गांव के दस-पंद्रह नवयुवक लाठियां-कुल्हाड़ियों से युक्त होकर हरिया की तलाश में चल दिए। नेशनल कॉर्बेट पार्क की सीमा से सटी एक पहाड़ी के नीचे उन्हें हरिया की लाश मिल गई।' डी.एफ.ओ ने फिर प्रार्थना के लहजे में कहा, 'इस समय नेशनल कॉर्बेट पार्क में स्थानीय के साथ विदेशी टूरिस्ट भी आए हुए हैं। यदि कोई हादसा हो जाता है तो देश की शान में बट्टा लग जाएगा। आप ही देश को दाग लगने से बचा सकते हैं।'

एक तो दिनभर की थकावट, दूसरे कड़ाके की गर्मी, तबीयत उनके साथ जाने को न करती थी, पर डीएफओ की आंखों में एक खिंचाव था। वह खिंचाव प्रेम का आकर्षण-सा न था वरन कंपायमान भावी आशंका से भयभीत सैलानियों की आंखों से निकलती हुई मूक याचना का खिंचाव सा था। उनकी आंखें कह रही थीं, 'सतनाम सिंह, यदि तुम हृदयहीन नहीं हो तो हमारी रक्षा करो।'

उसने अपने पुरखों से सीखा था, 'देश की आन-बान-शान पर आंच आ रही हो, बिना सोचे-विचारे चल पड़ो।' वही उसने किया। वन-बीहड़ सहचरी बंदूक उठाई। कारतूस जेब में डाले और उनके साथ जीप में बैठ गया। रास्ते में डीएफओ ने उससे कहा, 'मेरी बड़ी चिंता मंत्री जगजीत मान को लेकर है, वह लेकव्यू रिसोर्ट में अपनी बेटी और उसके मंगेतर के साथ ठहरे हुए हैं। यह रिजोर्ट लेक के किनारे स्थित है। हो सकता है, नर भक्षी बाघ इस लेक में पानी पीने पहुंचे।'

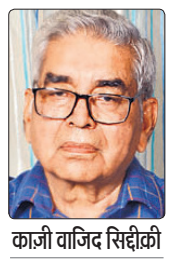

काज़ी वाजिद सिद्दीक़ी
बरेली

सतनाम रिजोर्ट के पास की एक पहाड़ी पर बड़ा चौकन्ना बैठा था। पहाड़ की चोटी पर निकलते सूरज की किरण गजब ढा रही थी। एक झाड़ी के आस-पास चिड़ियां कुछ विचित्र-रूप से चिड़चिड़ा रही थी। उधर जो देखा, तो हृदय की धड़कन एकदम बढ़ गई। सामने तीन सौ गज पर झाड़ी के सहारे बाघ खड़ा हुआ दिग्दर्शन कर रहा था और चिड़िया अपनी शक्ति भर उस पर विरोध का प्रदर्शन कर रही थीं। उसके पास रायफल न थी, बंदूक थी। रायफल न लाने की मूर्खता पर अपने को हजार बार कोसा, क्योंकि बारह नंबर बंदूक की मार इतनी दूर नहीं होती। बाघ थोड़ी देर बाद अपने शिकार की ओर शाही शान से चला और पचास-साठ गज दूर रह गया। बाघ उससे बेखबर उसके पास से दबे पांव गुजरा। वह समझ गया, इसका ध्यान अपने शिकार पर केंद्रित है। मुझे उस अवसर का लाभ उठाना चाहिए। तभी किसी लड़की ने बाघ को देखा और चीख पड़ी। बाघ ने लड़की पर छलांग लगाई तभी सतनाम ने बाघ पर गोली चला दी। बाघ दहाड़ा और घायल होकर लड़की से सटकर गिर पड़ा। सतनाम ने लड़की को उठाया और पहाड़ी की ढलान पर लुढ़कता हुआ नीचे पहुंच गया।

फायर की आवाज सुनकर रिजोर्ट के सुरक्षा गार्ड आ गए थे। उन्होंने लड़की को पहचान लिया। 'यह सिमरन मान हैं, मंत्री जी की बेटी।' वह लड़की को लेकर उसके कमरे में गया। सिमरन ने पापा को बताया- 'वह मंगेतर के साथ पहाड़ी के ऊपर उगता सूरज देखने गई थी। अचानक झाड़ियों से बाघ निकला, जिसे देखकर मैं चीख पड़ी। रविन्द्र मुझे छोड़कर भाग गया। बाघ ने मुझ पर छलांग लगाई। मेरी चीख सुनकर सतनाम ने उसे गोली मार दी और मुझे गोद में लेकर रोल करते हुए नीचे ले आए। रविन्द्र मुझसे आंख नहीं मिला पाया, चुपचाप खिसक गया। कितना नीच है-छी ...?

'वाहे गुरु की कृपा से तुम बच गई।' फिर उन्होंने सतनाम से कहा, 'तुमने मेरी बेटी की जान बचाई, 'बोलो क्या ईनाम चाहिए?' उसने कहा, 'आपका आशीर्वाद।' फिर हाथ जोड़कर कहा, 'मुझे चलना होगा, मां बाट जोह रही होगी।'

सिमरन सोचने लगी, 'सिखों के शौर्य के किस्से उसने मां से सुने थे। क्या सतनाम उन जैसा है?' वह मन-ही-मन उससे प्रेम करने लगी। उसने पापा से कहा, 'मैं उस देवी के दर्शन करना चाहती हूं जिसने ऐसे वीर पुत्र को जन्म दिया।' पापा ने बेमन से उसे परमीशन दे दी।

रास्ते में पक्षियों ने उन्हें गाना सुनाया। अचानक ही सिमरन धीरे से बोली, 'मेरी जिंदगी सिर्फ एक इंसान की तावेदार है। सिर्फ वही इंसान मेरी खुशी की जिम्मेदारी ले सकता है।' सिमरन ने अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कहा, 'उसके लिए मेरे मन में एक खास जगह है, एक खास एहसास है। सच-सच कहूं तो मैं आपसे मुहब्बत करती हूं। यदि आप नहीं मिले तो मैंने जो समय साथ गुजारा है, वह पूरे जीवन को रौशन करने के लिए काफी है।' सतनाम ने उसका हाथ पकड़ा और कहा, 'दूसरा हाथ भी दो।' उसने उसके दोनों हाथ चुमे और उसकी ओर देखकर कहा, 'तुम्हारी आंखों में सच्चाई झलक रही है।' वे बहुत खुश थे, उन्होंने अपना सही जीवनसाथी तलाश लिया था। मुहब्बत के इजहार से ज्यादा जरूरी मां को बताना था। उसकी मां दरवाजे पर इंतजार कर रही थी। बोली, 'यह चांद का टुकड़ा कहां से ले आया?' उसने कहा, 'मां अभी तक तो यह लड़की है, तुझे भा गई तो चांद का टुकड़ा हो जाएगी।' लड़की ने मां के पैर छुए। मां ने अपनी ओढ़नी उस पर डाल दी और आशीर्वाद दिया। तभी मंत्री जी लाव लश्कर के साथ आ गए। उन्होंने सिमरन से कहा, 'दर्शन हो गए हो, तो चलो।' भयभीत सिमरन ने मां की ओर देखा, आंखों ही आंखों में कहा, 'मां मुझे बहू बना लो।' मां ने उसके सिर पर हाथ रख कर कहा, 'दासता की जंजीरों से मुक्त होने तक मेरा मुंडा तेरा इंतजार करेगा'। सिमरन घर आ जाती है, लेकिन वह अतीत में खोई रहती है। सिमरन की यह दशा देखकर उसकी मां को मन-ही-मन चिंता होने लगी। सिमरन की मां फिर एक दिन मंत्री जी से बोली, 'तुम्हारी एक ही लड़की है वह जैसे बिना इलाज के मरी जा रही है।' डॉक्टर आया देख-सुनकर बोला, 'बीमारी-बीमारी कुछ नहीं, मनोवैज्ञानिक आघात हैं। समय रहते दूर नहीं किया तो जीना मुहाल कर सकता है।'

सिमरन की मां, बेटी को देखकर तनिक हंसती हुई बोली, 'रविन्द्र से ब्याह हो जाने पर सब कुछ अन्यंत्र चला जाएगा।' इस बार सिमरन ने गर्दन घुमाई फिर बोली, 'उससे विवाह में नहीं करूंगी।' ... 'विवाह नहीं करोगी?' ... 'नहीं, किसी प्रकार भी नहीं।' 'मैंने धर्म को साक्षी मानकर सतनाम को अपने पति के रूप में स्वीकारा है। संसार में उसे छोड़कर कोई भी पुरुष मुझे स्पर्श नहीं कर सकता।' सिमरन की चीत्कार बाहर तक जा पहुंची। क्या हुआ, क्या हो गया, कहते हुए मंत्री जी दौड़ते हुए आए। सिमरन मूर्छित पड़ी हुई थी। उसके हाथ में विष की शीशी, प्यार की दास्तां बयान कर रही थी।

सिमरन की आत्महत्या का समाचार सुनकर, सतनाम और उसकी मां भागते हुए अस्पताल पहुंचे। सतनाम की मां ने उसके हाथ अपने हाथों में लेकर कहा, 'तूने मुझसे बहू बनने का वादा किया था।' ... एक गैर औरत का अपनी बेटी के प्रति असीम प्रेम देखकर, सिमरन के पापा का पितृत्व जाग गया। उन्होनें कहा, 'बेटी मुझे माफ कर दे, सतनाम ही तेरे लिए योग्य वर है।' पास खड़े सतनाम की आंखों में आंसू देखकर, सिमरन में जीने की लालसा पैदा हो गई। वह होश में आ गई, उनकी खुशियां लौट आईं। कुछ दिन बाद धूमधाम से उनका विवाह हुआ।

समीक्षा

सफलता के साथ आध्यात्मिक जीवन की प्रेरणा

प्रेरणा जीवन में महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह हमें लक्ष्य की दिशा में अग्रसारित करने, संघर्ष करने और सफलता की ऊंचाइयों को छूने के लिए उत्साहित करती है। नृपेंद्र अभिषेक की पुस्तक ऊर्जस्वी ऐसी ही प्रेरक आलेखों का संग्रह है, जो न सिर्फ आई एएस /पीसीएस के प्रतियोगियों के लिए उपयोगी है वरन यह आमजनों के लिए उतनी ही उपयोगी है, जो जीवन के उन मूल्यों को सिखाती है जिससे व्यक्ति न सिर्फ पेशेवर जीवन में बेहतर होते हैं, बल्कि व्यक्तिगत जीवन की जटिलताओं को पार पाने को लेकर नया दृष्टिकोण मिलता है।

लेखक ने पुस्तक में सफलता को प्राप्त करने के सीढ़ियों पर ध्यानाकर्षित करते हुए लिखा है। "असफलता, सफलता की दिशा में उठाया गया पहला कदम है। यह सामान्य है कि असफल होने पर इंसान निराश और मायूस हो जाता है, लेकिन यह निराशा क्षणभंगुर होती है। यदि आप उस असफलता का कारण ढूंढने की कोशिश करेंगे तो आप अपनी कमियों को पहचान पाएंगे, त्रुटियों को सुधार कर दोबारा प्रयास कर पाएंगे"।

पुस्तक के सभी लेखों ने पाठकों के अंदर खुद को समझने के लिए भी उत्साहित किया है। उनके लेखों ने जीवन में एक नए आयाम को जन्म देने का काम किया है। प्रेम, सद्भाव, ममता, वात्सल्य, नैतिकता, सद्गुण इन सबको रोशनी से परिभाषित किया गया है। इसके विपरीत ईर्ष्या, द्वेष, अनैतिकता आदि भावनाओं को अंधेरे से चित्रित किया जाता रहा है, लेकिन ये बस प्रतीकात्मकता तक ही सीमित है। प्रकाश और अंधकार, फूल और कांटे की तरह जीवन में भी सुख-दुःख, लाभ-हानि, राग-द्वेष, सफलता-असफलता जैसे क्षणिक अनुभव हमारे साथ बने रहते हैं।

पुस्तक में साफ तौर से जीवन में अनैतिक अवगुणों से दूर रहने की सलाह दी गई है। अपने जीवन में इन सब से दूरी बना कर आगे बढ़ने की सलाह दी गई है। इंसान सदा ही बदले की आग में जलता है। इंसान अपना आधा जीवन उन लोगों से बदला लेने में, षड्यंत्र रचने में लगा देता है जिन्होंने उसे दुख पहुंचाया था। बदले की भावना हमारे जीवन को एक दिन नष्ट कर देती है। वास्तव में बदले की भावना मन में रखना पाप से कम नहीं। इसके ठीक विपरीत क्षमा भाव पुण्य से कम नहीं, इसीलिए जीवन में क्षमा भाव का ज्यादा महत्व है। 'ऊर्जस्वी' में सन्निहित आलेख जहां जीवन की सफलता के लिए आवश्यक हैं, वहीं आध्यात्मिक जीवन की प्रेरणा भी हैं।

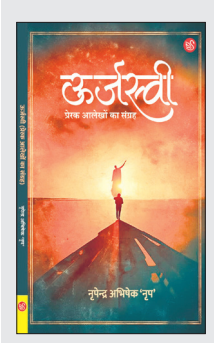

पुस्तक : ऊर्जस्वी
लेखक : नृपेन्द्र अभिषेक नृप
प्रकाशन : श्वेतवर्णा प्रकाशन, नई दिल्ली
मूल्य : 199 रुपए
पृष्ठ- 115 पेज
समीक्षक : लवली आनंद

लघुकथा

लज्जाबोध

कानपुर से लखनऊ होते हुए आजमगढ़ जाने वाली रोडवेज बस में मैं रामादेवी से सवार हुआ। अच्छे वेतन की नई-नई नौकरी करते हुए अभी कुछ-एक वर्ष ही गुजरे थे। समाजसेवा मेरी हॉबी थी।

जाजमऊ का गंगापुल पार करते ही बस ने अपनी रफ्तार बढ़ा दी। यात्रियों से भरी बस में केवल पीछे की अंतिम सीट खाली थी। उस पर यात्रियों ने अपनी गठरी, झोले और बड़े आकार के ऐसे सामान रख दिए थे जिन्हें अपने पास रखने में असुविधा हो रही थी। प्रायः ऐसा सामान कोई चोर या उठाईगीर नहीं ले जाता।

मेरे आगे की तीन यात्रियों की सीट में दो बलिष्ठ दिखने वाले जवान लड़के लापरवाही से ऐसे फैलकर बैठे थे कि किसी अन्य यात्री ने उनके बीच की सीट लेना मुनासिब न समझा। सभी ने कहीं और सीट तलाश ली। कुछ देर में उन दोनों ने सिगरेट सुलगाली। मैं 'धूम्रपान निषेध' की चेतावनी वाली लिखावट की ओर देखने लगा। 'इन्हें रोकना कंडक्टर का काम है' मन में स्वयं बोला, लेकिन असल में उन लोगों का तौर-तरीका देखकर मेरी हिम्मत छोटी पड़ गई थी। हां अगर उनकी जगह कोई गांव का देहाती बीड़ी पी रहा होता तो मैं उसे जरूर रोक देता। मैंने कंडक्टर की ओर देखकर लड़कों की तरफ धीरे से उंगली उठाई। कंडक्टर बेचारे ने ".....च्च.." बोलकर अपनी लाचारी सी प्रकट की।

अतुल मिश्र
डिप्टी मैनेजर (इफको) बरेली

रोजाना बस में चलने वाले ऐसे उदंड यात्रियों से उलझने की उसकी हिम्मत नहीं पड़ी। दोनों युवकों में से लाल टी-शर्ट पहने वाले ने अपने मोबाइल से तेज आवाज में गाना चलाना शुरु कर दिया। इस पर भी सभी यात्री व बस कंडक्टर निर्विकार से बने रहे। मैं अपनी सीट पर मन मसोस कर बैठा युवकों के 'लैक ऑफ सिविक सेंस' के बारे में सोचता रहा।

कंडक्टर ने सभी यात्रियों के टिकट बनाए। वह अपने स्थान पर खड़ा होकर बस के सभी यात्रियों की गिनती करने लगा, फिर कुछ देखने के लिए पीछे की अंतिम सीट पर जा पहुंचा। वहां एक सत्रह-अठारह वर्ष का कमजोर सा लड़का गठरियों के बीच में दुबका हुआ था। कंडक्टर ने उसकी कमीज का कॉलर पकड़ कर उठाया। "कहां से चढ़े हो? टिकट दिखाओ।" कंडक्टर गरज कर बोला। कोई जवाब न मिला। "कहां जाना है?"

" लखनऊ तक" वह बड़ी मुश्किल से बोल सका। जाहिर हो चुका था कि वह बिना टिकट के है। प्रथम दृष्टया उस पर चोर या उठाईगीर होने का शक हो रहा था। सभी ने अपना-अपना पॉकेट व सामान चेक किया। कंडक्टर ने बस रुकवा दी और लड़के को धकियाते हुए गेट से नीचे उतार दिया।

वह नीचे से ही रिरियाते हुए बोला, "साहब! मेरे पास पैसे नहीं है, मां बलरामपुर अस्पताल में भर्ती है। हालत बहुत खराब है। मुझे मत उतारो।"

"बस में चलना है तो किराया दो, बस तुम्हारे बाप की नहीं है।" कंडक्टर तैश में बोल रहा था। एकबारगी मेरे मन में आया कि उसकी मदद कर दूं, लेकिन वह गलत व्यक्ति हुआ तो? और कोई गुल खिला दिया तो...? आंखों में आंसू भरे वह अभी भी बस का गेट पकड़े याचक की भांति खड़ा था।

अचानक आगे की सीट पर बैठे युवकों में से लाल टी-शर्ट वाले ने आदेशात्मक आवाज में कहा है- "ऐ लड़के! अंदर आ जाओ" फिर कंडक्टर को देखकर बोला, "इसका टिकट बना दो" और जेब से पांच सौ का नोट निकालकर उसे थमा दिया। कंडक्टर ने लड़के को बस में चढ़ा लिया। बस चल पड़ी। वे युवक फिर से सिगरेट पीने लगे। मुझे अपनी जेब में पड़े बटुए को छूने में बहुत शर्म महसूस हुई। उन युवकों की ओर देखने में अत्यंत लज्जाबोध हो रहा था।

संस्मरण

पुस्तक मेले में विमोचनबाजी

पुस्तक मेले में किताबों की दुनिया में पहुंचते ही विमोचन दृश्य दिखने लगे। हर अगली स्टॉल पर विमोचन होता दिखा। कुछ मिशनरी विमोचक भी दिखे। लेखक के साथ आए, दुकान से किताब उठाई, किताब को सीने से सटाया, फोटो खिंचाई, लेखक से हाथ मिलाया और किताब सहित अगले विमोचन के लिए निकल लिए। हमने एक दुकान वाले से पूछा भी कि ये पुस्तक विमोचक तुम्हारी किताबें कब्जे में करके निकल लिए तुम देखते रह गए।

उसने बताया कि -'देखते नहीं रह गए। हम ध्यान से देखते रहते हैं। किताब विमोचक के नाम चढ़ा देते हैं। उनको बिल भेजेंगे। छोड़ेंगे नहीं।' हमको दुकानदार की निष्ठुरता पर बड़ा गुस्सा आया। समझ में नहीं आया कि जिस चीज की चोरी तक को अपराध नहीं माना जाता उसको सामने-सामने ले जाने पर उसके पैसे बाद में देने पड़ें। मतलब इंसानियत का चलन ही खत्म हो गया। विमोचन करने वाले कभी-कभी किताब विमोचन करते हुए लोग यह भी सुनिश्चित करते दिखे कि सीने से सटी किताब उल्टी नहीं पकड़े हैं। हमारे न्यू वर्ल्ड पब्लिकेशन पहुंचते ही प्रेम जनमेजय जी और साथ ही लालित्य ललित जी वहां पहुंचे। प्रेम जी, लालित्य ललित जी और अपन की किताब का किताब वहां विमोचन हुआ। फोटो भी हुए। पता नहीं किसने खींचे थे फोटो। लालित्य भाई जुगाड़ करके मंगवा दें तो मेले में हुए पहले विमोचन की याद साथ रहेगी।

प्रेम जी ने आरिफा एविस से हमारी किताब खरीदी, लेकिन हमारी हिम्मत नहीं हुई कि फौरन हम भी उनकी किताब खरीद लें। बाद में अगले दिन हालांकि हमने प्रेम जी की, हरीश नवल जी की और कई व्यंग्यकार साथियों की किताबें खरीदी। अरविंद तिवारी जी और प्रमोद ताम्बट जी की किताबें हम पहले ही ऑनलाइन मंगवा चुके थे।

अनूप शुक्ल
कानपुर

श्रीलाल शुक्ल जी ने अपने लेखन के बारे में टिप्पणी करते हुए लिखा है -'मेरा अधिकतर लेखन मुरव्वत का लेखन है।' इसी तर्ज पर पुस्तक मेले से अधिकतर खरीद मुरव्वत की खरीद होती है। मित्र लेखकों की किताबें खरीदने में सोच की गुंजाइश कहां होती है। न्यू वर्ल्ड पब्लिकेशंस के सामने ही डॉ. पवन विजय खड़े दिखे। देखते ही कस के गले पड़ गए। हड्डी जकड़ गई, सांस उखड़ने को हुई। अपने हाल देखकर हमको उन राष्ट्राध्यक्षों के हाल याद आए जो बुजुर्गियत की उम्र में विश्व सम्मेलनों में लपक के आपस में कड़क आलिंगन करते हैं। पवन विजय जिस गर्मजोशी से गले मिले उसको संतुलित करने के लिए उन्होंने मिसरा पढ़ा -'तुम्हई देखि शीतल भई छाती।' यह एहसास हुआ कि हम आदतन बात और व्यवहार में 36 का आंकड़ा रखने के लिए कितना सजग रहते हैं। हमको अंदेशा हुआ सर्दी के मौसम में कहीं ठंड न लग जाए, लेकिन फिर बात किताबों की होनी लगी और बात आई-गई हो गई।

किताबों की बात शुरू हुई तो पता चला कि डॉ. किरण मिश्रा का ताजा आया कविता संकलन 'ब्रह्मांड का घोषणा पत्र एवं अन्य कविताएं' सामने सर्व भाषा ट्रस्ट पर मौजूद था। कविता संकलन खरीद कर उसका विमोचन किया गया। कविता संकलन के विमोचन के बाद पवन विजय ने अपने उपन्यास 'जोगी-बीर' के साथ भी फोटो खिंचवा ली। किताब खरीदकर उसका भी विमोचन किया गया। इस बीच मनु कौशल जी भी सपत्नीक वहां पधारे। मनु जी आजकल आलोक पुराणिक जी के साथ दिल्ली के लोगों को टहलाते हुए दिल्ली की विरासत से लोगों को रूबरू कराते हैं। वाक कराते समय मनु जी के अंदर गालिब, खुसरों और दीगर बुजुर्गों की आत्माएं आकर लोगों को गुजरे जमाने की दास्तान सुनाती रहती हैं। मनु जी ने भी हमारी खिताब खरीदकर उसका विमोचन किया।

इस सिलसिले को आगे बढ़ाते आयुध निर्माणी के वरिष्ठ कथाकार गोविंद उपाध्याय जी ने अपना नवीनतम संग्रह 'बिना पते वाला आदमी' हमको भेंट किया। देश की हर प्रतिष्ठित पत्रिका में गोविंद जी की कहानियां छप चुकी हैं। तीन दशक से भी अधिक समय से लिखते हुए गोविंद जी के छपने का सिलसिला बीस साल पहले 2004 में शुरू हुआ और अभी तक कुल जमा 19 कहानी संग्रह और उपन्यास आ चुके हैं। हमने भी अपनी लेखकीय प्रतियों में से एक प्रति वहीं से लेकर गोविंद जी को भेंट की। उसके साथ फोटो भी खिंचवा ली। एक और विमोचन संपन्न हुआ।

फ़ोटो और विमोचन का सिलसिला आगे बढ़ाते हुए आरिफा ने भी अपनी ही दुकान से किताब खरीदकर विमोचन किया। आरिफा से वर्षों पुरानी जान पहचान और बातचीत के बाद मुलाकात पहली बार हुई। आरिफा की कोशिश और बार-बार आग्रह के चलते ही मेरा यह व्यंग्य संकलन आ पाया। सजग संपादक का काम करने के चलते इधर आरिफा की लिखाई में कुछ रुकावट आई है। उम्मीद है कि सिलसिला फिर जोर पकड़ेगा।

आलोक निगम भी इतवार होने के चलते छुट्टी के कारण मेले में आए और फिर घटनास्थल पर भी। आलोक अपनी पोस्टों में गणित के सवालों से लोगों के बीच अपने ज्ञान का आतंक मचाते रहते हैं। गनीमत है कि पुस्तक मेले में उनकी गणित की पाठशाला का शटर गिरा रहा।

क्या है शादियां टूटने की मुख्य वजह

परिवार में समझबूझ को बढ़ाने के लिए एक ईमानदार पहल, जो नवदंपति को इस महत्ता का अहसास करा सके कि परिवार में समझबूझ नहीं होगी तो किसी का भी हित नहीं हो सकेगा, न ही परिवार का, न ही समाज का, न ही आर्थिक या अन्य कोई। परिवार में अनुशासनहीनता पैदा किए बिना सुलझे हुए तरीके से बीच के सुंदर रास्ते निकालने की समझदारी इन शादीशुदा जोड़ों में विकसित करना आज की बहुत बड़ी आवश्यकता है।

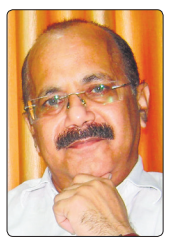

राजेंद्र वर्मा
कानपुर

मैंने बीते दिनों एक खबर पढ़ी जिसने मुझे बहुत व्यथित किया कि महाभारत में श्रीकृष्ण का रोल निभाने वाले नितीश भारद्वाज अपने घर में गृह कलह से बहुत परेशान हैं और उनका केस कुटुंब न्यायालय में है। यह तो बिल्कुल भी नहीं माना जा सकता कि जिस व्यक्ति ने कई साल तक श्रीकृष्ण को जिया हो, उनके विचारों को पर्दे पर बिल्कुल जीवंत कर दिया हो, उनमें समझदारी का अंश इतना कम होगा कि यह स्थिति आ जाए। निश्चित ही सारी परेशानी का कारण केवल वे ही नहीं हो सकते यह बात दावे के साथ कही जा सकती है। जब एक अच्छे विवेक के स्तर वाले पुरुष के घर में यह स्थिति है तो सामान्य परिवार में क्या स्थिति हो सकती है? सोचकर देखिए।

मुझे लगता है कि वैवाहिक जोड़ों में बढ़ते अलगाव, पारिवारिक तनाव, और तलाक के इन मामलों को बढ़ाने में अग्रणी भूमिका निभाई है हमारे फिल्मकारों ने, जिन्होंने अपनी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता में कुछ नया दिखाने की चाहत में स्त्री को जिन स्वछंद, निरंकुश, बागी और मनमर्जी वाले तेवरों में दिखाया और महिमामंडित किया, उसने परिवार और इस समाज का बहुत अहित किया।

फिल्मों में महिला सशक्तिकरण के इस भ्रामक तरीके को देखकर महिला भी भ्रमित हुई, उसमें वैचारिक और भावनात्मक शून्यता आने लगी और वह अपनी जिम्मेदारियों वाले नेचर और स्त्रीत्व को अपनी कमजोरी समझने लगी जिसने स्त्री के अंदर सोई हुई इस आग और चिंगारी को हवा दे दी और उसने अपने आगे बढ़ने के रास्ते में सबसे बड़ा रोड़ा अपनी जिम्मेदारियों और स्त्रीत्व वाले गुण को ही मान लिया और बिना तनिक भी देर लगाए अपने को स्वछंद और पावरफुल दिखने वाली भूमिका से जोड़ लिया। यहीं से शुरुआत हुई परिवारों में क्लेश की, परिवारों में अनुशासनहीनता की जिसने न केवल भारतीय परिवारों का, बल्कि भारतीय समाज का भी बहुत ज्यादा अहित किया। आज हमारा समाज इसके बहुत सारे दुष्प्रभाव झेल रहा है, क्लेशित परिवार, अलगाव, तलाक, बढ़ते बाल अपराध, बढ़ते महिला अपराध, जघन्य अपराधी मानसिकता वाले बच्चे, पैसे की अंधी दौड़ में होने वाले विभिन्न अपराधों में शामिल बच्चे, अवसादग्रस्त पुरुष और महिलाएं, ये सब इसी अनुशासनहीनता के परिणाम ही तो हैं। इन सब दिक्कतों में कुछ न कुछ प्रभाव इस कारण का भी है। इन फिल्मकारों के चक्कर में आकर स्त्री ने यह भूलने में तनिक भी देर नहीं लगाई कि क्यों भारत में स्त्री को देवी का दर्जा दिया जाता है, उसकी पूजा की जाती है। उसको देवी का दर्जा दिया जाता है, उसके सीता की तरह साथ देने वाले गुण की वजह से, श्रीकृष्ण को ताकत देने वाली राधा की वजह से, समुद्रमंथन के समय अपने दिमाग से समस्या सुलझाने की कला रखने वाली विष्णुपत्नी माता लक्ष्मी जी की वजह से, अपने प्रिय लक्ष्मण का बेवजह वियोग सहने करने वाली लक्ष्मण की पत्नी मांडवी की वजह से आदि बहुत सारे उदाहरण हैं। सोचकर देखिए क्या दुनिया के दूसरे किसी देश में स्त्री देवी के रूप में पूजी जाती है क्या? स्त्री को देवी बनाया उसके गुणों ने, क्षमा, करुणा, शील, संस्कार, समर्पण, त्याग आदि ने। स्त्री के यही गुण भारतीय सामाजिक ताने -बाने को हमेशा से एक ताकत देते रहे हैं और कदाचित यही गुण भारतीय समाज के दुनिया में सर्वश्रेष्ठ समाज होने की धुरी भी थे। श्रीराम भी तो अपने गुणों के कारण ही प्रभु श्रीराम बन गए, क्या ये बात आपको अप्रासंगिक लगती है। हमारा समाज इसलिए भी सर्वश्रेष्ठ था, क्योंकि हम केवल अपनी फिक्र नहीं करते चाचा, मामा, दादा, ताऊ, बुआ, मौसी, नाना, नानी, बाबा, दादी और समाज के अन्य बड़े-बूढ़ों की भी फिक्र करते हैं, लेकिन अब तो स्थिति इतनी विकराल हो गई है कि इन सबकी फिक्र करने को कौन कहे केवल अपने परिवार, अपने पति और अपने परम नजदीकी लोगों से भी निभाना मुश्किल हो रहा है।

यह सच है कि कोई भी समाज बिना महिलाओं को शिक्षित और पावरफुल किए अच्छे से विकसित नहीं हो सकता, लेकिन इस शिक्षित और पावरफुल होने के लिए परिवार में अनुशासन खत्म करना जरूरी नहीं। इसके लिए बीच के बहुत सारे समझदारी भरे रास्ते निकाले जा सकते हैं, पर उनमें समय लगता है और दिमाग लगता है, जबकि स्वछंद होने की सनक में सिर्फ एक सेकंड लगता है। इसलिए धैर्य की कमी के चलते तात्कालिक रूप से इसे ही स्त्री ने तुरंत अपनाया बजाय कि समझबूझ से कोई बीच का रास्ता निकाला जाए।

सशक्त होने की इस अंधी दौड़ ने उसे यह भुला दिया कि महान शक्ति महान जिम्मेदारी के साथ आती है। इसे कतई सशक्तता नहीं कहा जा सकता। स्वच्छंदता को सशक्तता कभी नहीं कहा जा सकता। पुरुष भी इस समस्या को बढ़ाने के लिए बराबर के भागीदार हैं, केवल महिलाएं ही इसके लिए जिम्मेदार नहीं हैं, लेकिन हमारा अपने पारिवारिक संस्कारों से दूर हो जाना इस समस्या के बढ़ने की अहम कड़ी है यह सबको समझना होगा। चूंकि बच्चे का ज्यादातर समय मां के साथ बीतता है और पिता से तो केवल सुबह और शाम में मुलाकात होती है। इसलिए इन संस्कारों को बच्चे में मां ज्यादा आसानी से और अच्छी तरह डाल सकती है।

वेंगसरकर नहीं 'कर्नल'

वीर विनोद छाबड़ा
वरिष्ठ लेखक, लखनऊ

दिलीप बलवंत वेंगसरकर ने इंडिया के लिए 116 टेस्ट में 42 की एवरेज से 6868 रन, 17 शतक भी बनाए, उनका निकनेम 'कर्नल' था। ये उनके बचपन का नाम नहीं था। उन्हें ये नाम लाला अमरनाथ ने दिया था। दरअसल 1975 में वो ईरानी ट्रॉफी में रेस्ट ऑफ इंडिया के विरुद्ध बंबई के लिए बैटिंग कर रहे थे। उस समय उनकी सिर्फ 19 वर्ष की उम्र थी, बिशन सिंह बेदी और इरापल्ली प्रसन्ना जैसे वर्ल्ड क्लास स्पिनर्स रेस्ट ऑफ इंडिया के लिए बॉलिंग कर रहे थे। उस समय दोनों अपने करियर के शबाब पर थे। दुनिया के तमाम महान बैट्समैन उनसे खौफ खाते थे, लेकिन वेंगसरकर ने उनका कतई लिहाज नहीं किया। उन्हें जमकर धोया। चौके-छक्के लगाते हुए 110 रन पीट डाले। उस समय रेडियो कमेंटरी बॉक्स में लाला अमरनाथ बैठे थे। वो वेंगसरकर की बल्लेबाजी पर फिदा हो गए। कहने लगे, मुझे कर्नल सीके नायडू की याद आ रही है। सीके नायडू बीस से लेकर पचास के सालों में बल्लेबाजी के बादशाह थे, बेहतरीन स्ट्रोक प्लेयर। होल्कर स्टेट की आर्मी में वो कर्नल के पद पर तैनात थे। उन्हें क्रिकेट की दुनिया में भी कर्नल के नाम से जाना जाता था। बस तब से दिलीप वेंगसरकर क्रिकेट की दुनिया में 'कर्नल' के नाम से विख्यात हो गए। हालांकि खुद वेंगसरकर को कर्नल कहलाने में झिझक महसूस होती थी, लेकिन उनके साथी कहते थे। क्रिकेट के सबसे बड़े तीर्थ लॉर्ड्स मैदान पर तीन सेंचुरी ठोंकने वाले को 'कर्नल' ही तो कहेंगे।

मसाला पाव

खाना खजाना

मनीष कुमार सोलंकी

पाव को पहले हमारे देश में कौन जानता था! वास्तव में भारतीयों को मसाला पाव तैयार करने के लिए इसका भारतीय संस्करण बना हम प्रेरित कर सकते हैं, जो कोई भी इस नाश्ते का आनंद लेता है, उसे इसकी बनावट के साथ इसके स्वाद से प्यार हो जाता है। यह रेसिपी अपने आप में ही भोजन है। यहां पाव को मसालेदार सब्जियों के मिश्रण के साथ परोसा गया है। यह ताजा सब्जी, शिमला मिर्च, प्याज, टमाटर, गोभी और गाजर को मिला के बनने वाला एक स्वादिष्ट पकवान है। इन्हें और स्वादिष्ट बनाने के लिए स्वादिष्ट मसाले के साथ फ्राई किया जाता है। अब मसाला पाव को चखने का मतलब मुंबई जाना नहीं है, क्योंकि इसे कोशिश करके आप घर में बनाकर पाव भाजी को भी भूल सकते हैं और आपको मसाला पाव की तरफ झुकाव और इसे बनाने की अधिक इच्छा हो सकती है। मसाला पाव ऐसी चीज है, जो हमें खाने या नाश्ते के रूप में पसंद आ सकती है। यह फास्ट फूड मुंबई के रहने वालों में प्रसिद्ध है। मूल रूप से यह भारतीय खाद्य पदार्थ कुछ पुर्तगाली द्वारा पेश किया गया था जिसने इसे 'पाओ' नाम दिया था। आइए जानते हैं इसकी बनाने की विधि...

सामग्री

- 4-6 पाव
- आधा कप शिमला मिर्च बारीक कटी हुई
- आधा कप प्याज बारीक कटा हुआ
- 1 कप टमाटर बारीक कटा हुआ
- आधा कप पत्ता गोभी बारीक कटी हुई
- 1/3 कप गाजर बारीक कटी हुई
- ताजा हरा धनिया पत्ते 1/2 कप कटा हुआ
- चम्मच जीरा 1 चम्मच
- कश्मीरी लाल मिर्च पाउडर 1 चम्मच
- अदरक लहसुन पेस्ट
- नमक स्वाद अनुसार
- 1-1/ 2 चम्मच पाव भाजी मसाला 2-3 चम्मच मक्खन
- 1 चम्मच नींबू का रस

सजावट के लिए:

- कसा हुआ पनीर
- बारीक कटी धनिया की पत्ती

बनाने की विधि

एक पैन में मक्खन डालें, जब मक्खन पिघल जाए, तो जीरा डालें और अच्छी तरह मिलाएं जब तक कि यह हल्का भूरे रंग में नहीं हो जाता। अब बारीक कटी हुई (गाजर, गोभी) सभी सब्जियां डालें और इससे अच्छी तरह मिला दें। बारीक कटी हुई कैप्सिकम डालें और इसे अच्छी तरह से मिलाएं, अब इसे कुछ सेकेंड्स के लिए भूनें। अंत में बारीक कटा हुआ टमाटर मिलाएं और आंच को तेज कर के पका लें और नमक डाल के कुछ सेकंड्स के लिए अच्छे से मिला लें।

अब ढक्कन को कवर करें और इसे मध्यम आंच पर 4-5 मिनट तक पकाएं या जब तक सब्जियां नरम और पिलपिली न हो जाएं। पांच मिनट के बाद ढक्कन को खोलें और अगर सब्जियां नरम हो जाएं तो सभी मसाले मिलाएं। कश्मीरी लाल मिर्च पाउडर, पाव भाजी मसाला, ताजा हरा धनिया और सभी मसाले को सब्जी के साथ अच्छी तरह मिलाएं। अब गाढ़ी ग्रेवी बनाने के लिए थोड़ा पानी डालें और माशर की मदद से सभी सब्जियां को मैश करें। अंत में नींबू का रस डालें और अच्छी तरह से मिलाएं। ये ग्रेवी मसाला अब मसाला पाव बनाने के लिए तैयार है। मसाला पाव बनाने के लिए पाव के डेढ़ से दो इंच के टुकड़े कर लें। एक और नॉनस्टिक पैन लें और तवा पर कुछ मक्खन पिघलाएं। मक्खन पर पाव के टुकड़े रखें और इसे मध्यम आंच पर टोस्ट करें जब तक कि ये हल्का भूरा न हो जाए।

पाव के ऊपर कुछ मक्खन लगाएं और टोस्ट करें- अब पाव पर मसाला की मोटी परत को समान रूप से चम्मच से फैलाएं, कुछ टुकड़ों से इसे कवर करें और फिर पाव के ऊपर कुछ और मसाला डालें। इसी तरह मक्खन पिघलाएं और बाकि बचे पाव के टुकड़ों को भी टोस्ट कर लें और मसाला पाव बनाए। अंत में कटी हुई धनिया पत्ती और कसा हुआ पनीर के साथ गार्निश करें। मसाला पाव परोसने के लिए तैयार है। इसे गरम परोसें। (आप चाहें तो ग्रेवी में पनीर के छोटे-छोटे क्यूब 1-1 सेंटीमीटर के काटकर भी ग्रेवी में मिला सकते है, इससे मसाला पाव के साथ पनीर का स्वाद भी मिलेगा।)

साप्ताहिक राशिफल

-पं.मनोज कुमार द्विवेदी
ज्योतिषाचार्य, कानपुर

मेष — इस सप्ताह आपके द्वारा किसी भी कार्य में की गई पहल आपके लाभ का कारण बनेगी। ऐसे में कार्यक्षेत्र हो या फिर निजी जीवन किसी भी प्रकार की अच्छी पहल करने से न चूकें। यह सप्ताह आपको जीवन में नए अवसर दिलाने वाला साबित होगा।

वृष — इस सप्ताह आप बड़ा निर्णय या फिर नई पहल करते समय खूब सोच-विचार कर लें। मौसमी बीमारी अथवा अधिक भागदौड़ के कारण शारीरिक थकान बनी रह सकती है। इस दौरान आप अपनी दिनचर्या और खान-पान का विशेष ख्याल रखें अन्यथा आपको पेट संबंधी दिक्कतें हो सकती हैं।

मिथुन — यह सप्ताह सामान्यत: अनुकूल साबित होना चाहिए। कामकाज के सिलसिले में की जाने वाली यात्रा शुभ और लाभप्रद साबित होगी। इस दौरान नए और पुराने मित्रों से मेल-मुलाकात के योग बनेंगे। घर और बाहर आपको स्वजनों का पूरा सहयोग मिलता हुआ नजर आएगा।

कर्क — यह सप्ताह आपको छोटे-छोटे कार्यों को पूरा करने के लिए अधिक भागदौड़ करनी पड़ सकती है। इस दौरान स्वजनों से अपेक्षित सहयोग न मिल पाने के कारण आपके स्वभाव में चिड़चिड़ाहट बनी रहेगी। इस दौरान आय की प्राप्ति में व्यवधान आने और व्यय की अधिकता के चलते आपका बजट गड़बड़ा सकता है।

सिंह — इस सप्ताह न सिर्फ आय के नए स्रोत बनेंगे बल्कि किसी वरिष्ठ व्यक्ति की मदद से प्रियजनों के साथ उपजी गलतफहमियां दूर होंगी। कार्यक्षेत्र में नौकरीपेशा लोगों की विगत कुछ दिनों से चली आ रही परेशनियां दूर होंगी तो वहीं व्यवसाय से जुड़े लोगों के लिए यात्राएं उनकी प्रगति एवं लाभ का बड़ा कारण बनेंगी।

कन्या — इस सप्ताह गलत निर्णय लेने की आशंका बनी रहेगी। किसी भी कार्य में अड़चन या अवरोध की स्थिति में आपको खुद के क्रोध पर काबू करना होगा। इस दौरान जल्दी धन कमाने अथवा शार्टकट तरीके से सफलता पाने का तरीका अपनाने से बचें अन्यथा आपको बड़ा नुकसान झेलना पड़ सकता है।

तुला — इस सप्ताह आपकी आय के नए स्रोत बनेंगे और धन-धान्य में तेजी से वृद्धि होती हुई नजर आएगी। यदि आप समाजसेवा अथवा राजनीति से जुड़ें हैं तो आपको विशेष उपलब्धि हासिल हो सकती है। इस दौरान आपके कद एवं पद में वृद्धि होगी।

वृश्चिक — इस सप्ताह अपने विरोधियों से खूब सावधान रहने की आवश्यकता रहेगी। कार्यक्षेत्र में आपके विरोधी षडयंत्र रचते हुए नजर आएंगे। लोग बातों को दूसरे के सामने बढ़ा-चढ़कार पेश करने की कोशिश कर सकते हैं। ऐसे में आपको बगैर तनाव लिए हुए अपने लक्ष्य पर फोकस करना उचित रहेगा।

धनु — इस सप्ताह आपको करियर-कारोबार के सिलसिले में लंबी अथवा छोटी दूरी की यात्रा करनी पड़ सकती है। इस दौरान नौकरीपेशा लोगों को कार्यक्षेत्र में चुनौतीभरे कार्य सौंपे जा सकते हैं। यदि आप व्यवसाय से जुड़े हैं तो आपके कारोबार के विस्तार की योजनाएं साकार होती हुई नजर आएंगी।

मकर — इस सप्ताह सुख-सुविधा से जुड़ी चीजों पर आप अपनी जेब से अधिक धन खर्च कर सकते हैं। नौकरीपेशा में बदलाव करने की सोच सकते हैं। हालांकि यह निर्णय भूलकर भावनाओं में बहकर या फिर क्रोध में आकर न लें, अन्यथा आपको बाद में पछताना पड़ सकता है।

कुंभ — इस सप्ताह करियर-कारोबार के सिलसिले में लंबी अथवा छोटी दूरी की यात्रा करनी पड़ सकती है। यात्रा थकान भरी और उम्मीद से कुछ कम फल देने वाली साबित होगी, जिसके चलते आपका मन थोड़ा खिन्न रहेगा। कामकाज में आने वाली अड़चनों के चलते आपके मन में कुछ नकारात्मक विचार भी आ सकते हैं, जिससे आपको बचने की आवश्यकता रहेगी।

मीन — इस सप्ताह आपके सभी सोचे हुए काम समय से पूरे होते हुए नजर आएंगे। यदि आप पदोन्नति की योग्यता रखते हैं तो आपके कद औरपद में अपेक्षा से अधिक वृद्धि हो सकती है। कार्यक्षेत्र में उच्च अधिकारी आपके कामकाज की प्रशंसा करेंगे। व्यवसाय से जुड़ी समस्याएं दूर होंगी।

मैं जो भी काम करता हूं, अपना सौ फीसदी देता हूं: रवि किशन

शबाहत हुसैन विजेता, लखनऊ

भोजपुरी के सुपर स्टार रवि किशन अपनी हिन्दी फिल्म लापता लेडीज के प्रमोशन के लिए लखनऊ आए तो काफी उत्साहित दिखे। उन्होंने बताया कि इस फिल्म में उन्होंने जिस मनोहर की भूमिका निभाई है, उसमें बड़ी संख्या में कलाकारों ने ऑडिशन दिया था। खुद आमिर खान भी ऑडिशन देने आए, लेकिन किरण राव ने उन्हें रिजेक्ट कर दिया। जिस भूमिका को आमिर करना चाहते थे, उसे निभाना उत्साह की बात तो है ही। पेश हैं रवि किशन से हुई बातचीत के खास अंश :-

- आप बहुत तेजी से काम करने वाले हैं और आमिर खान लगातार रिसर्च करते हुए बहुत धीरे काम करते हैं। कहना चाहिए कि आमिर बहुत स्लो हैं। ऐसे में आमिर खान और रवि किशन एक साथ कैसे चल पाए?
- (सवाल सुनकर रवि किशन मुस्कुराए) जो चिंता आपकी है न वही चिंता आमिर खान की भी थी। उन्हें लगा कि यह मेरे साथ कैसे चल पाएगा, लेकिन आमिर बहुत समझदार हैं। उन्होंने देखा कि फिल्मी दुनिया में लोग चलकर आते हैं, लेकिन यह तो रेंगकर आया है। उन्होंने यह भी देखा कि इसके भीतर हजारों किरदार बसे हुए हैं।
- फिल्म लापता लेडीज बेटियों पर है। बेटियों के हालात से संतुष्ट हैं आप?
- मैंने इस फिल्म को करना चाहा, क्योंकि मैं खुद तीन बेटियों का पिता हूं। मेरी तीसरी बेटी हुई तो हमारे घर में ही यह सवाल उठने लगा कि वंश कैसे आगे बढ़ेगा? कितनी अजीब बात है कि मां जो खुद एक बेटी है वह भी अपने बेटे से बेटा ही चाहती है। हालांकि मेरी बेटी रीवा ने यह साबित कर दिया है कि बेटियां किसी से कम नहीं होतीं।
- इस फिल्म में अपनी भूमिका के बारे में बताएं?
- इसमें मैं पुलिस इंस्पेक्टर की भूमिका में हूं। वह इंस्पेक्टर हमेशा पान खाए रहता है। निर्माता किरण राव ने इस भूमिका को जीवंत करने के लिए एक दिन की शूटिंग में मुझे 180 पान खिलाए। फिल्म देखिएगा तो आनंद आएगा। आपको पता लगेगा कि पुलिस वाले के सीने में भी दिल होता है।
- भोजपुरी सिनेमा में आप सुपर स्टार माने जाते हैं, राजनीति में खुद को कहां पाते हैं?
- मुझे मेरे पिता श्यामा नारायण शुक्ला ने खूब तपाया है। मेरे पास मोह-माया कभी नहीं रही। यही वजह है कि मैं जो भी काम करता हूं उसे अपना सौ फीसदी देता हूं। बीजेपी ने भरोसा किया और गोरखपुर से सांसद बनाया तो मैं संसद में रोजगार तलाशने नहीं गया। मैं अपना रोजगार लेकर संसद में गया। इस समय में टॉप-10 सांसदों में हूं। सबसे ज्यादा प्रश्न पूछने वाला सांसद हूं। मैंने वकीलों की जिंदगी पर नेटफ्लिक्स के लिए वेब सीरीज बनाई है। गोरखपुर में मैं फिल्म इंडस्ट्री स्थापित करने की कोशिश में लगा हूं। अब चुनाव आ रहे हैं तो अपना पूरा वक्त राजनीति को दूंगा। चुनाव के बाद ही शूटिंग में शामिल होऊंगा।

वीकेंड कल्चर सेहत का दुश्मन

पश्चिमी सभ्यता से हम सब इस कदर प्रभावित हैं कि बिना सोचे-समझे, वे जो भी करते हैं उसके पीछे की वजह और उन आदतों व व्यवहार को जाने बिना अपनाते जाते हैं। उनका रहन-सहन हो या खान-पान या पहनना-ओढ़ना सब कुछ उनके वहां के भौतिक परिवेश और जलवायु के अनुकूल होता है। अत: उन्हें वह सब करना ही पड़ता है, लेकिन हमें इससे हमको क्या हमें तो लगता कि ये तो बड़ा कूल लग रहा चलो इसे अपना लेते हैं। हम केवल बाहरी चमक-दमक और आकर्षण को देखते हैं, जो प्रभावित तो करती है, लेकिन उसके पीछे की असलियत जानने का प्रयास किए बगैर ही हम उसकी नकल करते जाते हैं, जो अक्सर कई तरह के नुकसान पहुंचाती है जिनको हम समझ नहीं पाते हैं।

जब दिक्कतें सामने आती हैं तब तक देर हो जाती है और समझने से पूर्व ही हम किसी न किसी तरह की समस्या से ग्रसित हो जाते हैं। पश्चिमीकरण के अपने मोह को फिर भी छोड़ नहीं पाते हैं और हर एक बात में अंधानुकरण करते जाते हैं।

इसी तरह वीकेंड की जो नई संस्कृति प्रचलन में आई है वह भी कई मायनों में स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचा सकती है। यदि उसे सोच-समझकर योजनाबद्ध तरीके से नियोजित नहीं किया जाए तो यह दो दिन बाकी पांच दिनों पर भारी पड़ सकते हैं। ज्यादातर लोग जो बड़ी-बड़ी कंपनियों में नौकरी करते हैं, उनको सप्ताह के अंतिम दो दिनों का विराम मिलता है, क्योंकि कंपनियां पांच दिन उनसे जी-भरकर काम करवाती तो ऐसे लोगों की मानसिकता ही वीकेंड को लेकर बदल जाती है। वे पूरे पांच दिनों तक इन दो दिनों का इंतजार करते और इन दिनों को किस तरह से बिताना इसके बारे में ही सोचते रहते हैं। जब यह दिन पास आते हैं तो इनकी प्लॉनिंग तेज होने लगती और पूरा ध्यान केवल इसी पर केंद्रित हो जाता जिसके लिए सबके अपने-अपने तरीके होते हैं कि किस तरह वो इन दो दिनों को व्यतीत करना चाहते हैं। अधिकांश लोग बाहर जाने की सोचते हैं, जो परिवार के साथ रहते हैं, परंतु जो अकेले रहते हैं वे तो इसे अपने दोस्तों के साथ मिलकर मौज-मस्ती करते हुए समाप्त करना चाहते हैं।

इस मनोरंजन की परिभाषा भी सबकी अलग-अलग होती है। कोई घर पर रहते हुए ही अपने इन दिनों को खर्च कर लेने के सपने सजाता है तो कोई बाहर घूमने जाने के ख्यालों में खो जाता है तो कोई नई फिल्म देखकर एन्जॉय करना चाहता है। वहीं कोई केवल सारा दिन सोना और खाना ही पसंद करता है। मतलब सबकी दिनचर्या जो पांच दिनों बेहद अनुशासित और समय के अनुसार ढली होती है। सप्ताह के आखिरी दिनों तक आते-आते एकदम बेढंगी हो जाती है जिसमें न तो सोने, न जागने, न खाने और पीने का ही कोई निश्चित समय होता है। सब अनियमित ढंग से चलता है, जो आगे चलकर नुकसानदायक साबित होता है। सबके बीच में यदि एक समान बात देखी जाए तो इन दिनों के बारे में सबका यही विचार होता कि बहुत काम कर लिया अब बस, जी-भरकर जिंदगी का आनंद उठाना है। इस चक्कर में वे यही नहीं देख पाते हैं कि अपने जरा देर के आमोद-प्रमोद व उल्लास में उन्होंने किस तरह से अपने अनमोल स्वास्थ्य को बेमोल कर दिया जिसका पता भी तो देर से चलता है। जब धीरे-धीरे उनकी यह विलासिता उनके लिए मुसीबत बन जाती है या उसका असर उनकी सेहत में दिखने लगता जब कहीं जाकर वे तौबा करते हैं।

इंदु सिंह
स्वतंत्र लेखिका

पश्चिम की यह जीवनशैली उनके लिए अनुकूल है, क्योंकि वे न तो हमारी तरह गर्म देश में रहते हैं और न ही वे हमारी तरह तला-भुना या मसाले वाला भोजन ही करते हैं। इसी तरह उनके यहां का मौसम ठंडा तो वे सूट व टाई पहनते हैं, पर हमारे यहां केवल देखा-देखी में ही इसे अपना लिया गया है। सप्ताहांत अर्थात् वीकेंड में मनमर्जी करने वालों को इन दिनों की इस तरह से योजना बनानी चाहिए कि स्वाद व स्वास्थ्य दोनों का मिश्रण बना रहे और आप अगले सप्ताह पुनः नई ऊर्जा से भरकर अपने काम पर वापस जा सके। आखिर वो नहीं तो वीकेंड भी नहीं मिलेगा। इसलिए सावधानी में ही समझदारी है।

वर्ग पहेली (काकुरो)

काकुरो पहेली वर्ग पहेली के समान हैं, लेकिन अक्षरों के बजाय बोर्ड अंकों (1 से 9 तक) से भरा है। निर्दिष्ट संख्याओं के योग के लिए बोर्ड के वर्गों को इन अंकों से भरना होगा। आपको दी गई राशि प्राप्त करने के लिए एक ही अंक का एक से अधिक बार उपयोग करने की अनुमति नहीं है। प्रत्येक काकुरो पहेली का एक अनूठा समाधान है।

काकुरो 71

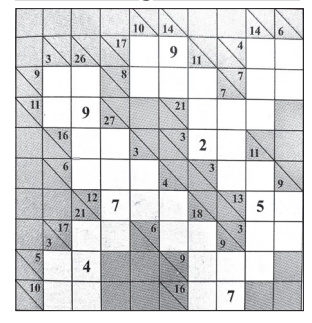

काकुरो 70 का हल

मुस्लिम बौद्धिक इतिहास में प्रभावशाली व्यक्तित्व नासिरुद्दीन तूसी

नासिरुद्दीन तूसी, मुस्लिम बौद्धिक इतिहास में एक अत्यंत प्रभावशाली व्यक्तित्व का नाम है। समकालीन बौद्धिक क्षेत्र में मोहकिक ए तूसी और ख्वाजा नासिर के नाम से प्रसिद्ध शेख तूसी के पिता भी इमामीया शिया मकतब ए फिक्र के एक बड़े आलिम थे। तूस में अपने पिता और मामा से बौद्धिक विज्ञान- लॉजिक, दर्शन और प्राकृतिक दर्शन, बीजगणित, ज्यामिती में शिक्षा प्राप्त करने के बाद आला तालीम हासिल करने के लिए समकालीन ज्ञान और शिक्षा के सुप्रसिद्ध केंद्र निशापुर का रुख किया। निशापुर में जल्द ही आप की पहचान एक असाधारण विद्वान के रूप में हो गई। निशापुर में उन्हें अपने समय के सुप्रसिद्ध शिक्षक- फरीदउद्दीन अल दामाद, कुतुबुद्दीन मिसरी (फख उद्दीन राज़ी के शिष्य) और कमालउद्दीन यूनुस से शिक्षा प्राप्त करने का गौरव प्राप्त हुआ। ऐतिहासिक रूप से यह दौर बहुत ही उथल-पुथल का कहा जाता है। मंगोल सेंट्रल एशिया से खुरासान की ओर लगातार बढ़ रहे थे। शेख़ तूसी जैसे विद्वान को जिस प्रकार की शांति और वातावरण चाहिए था, उसका सर्वत्र अभाव था।

संयोग से खूरासान के पहाड़ी इलाकों के कुछ किलों पर इस्माइली मत के शासकों का कब्जा था। कोहिस्तान के इस्माइली शासक नासिरुउद्दीन मूहताशीम के निमंत्रण पर शेख़ तूसी ने कोहिस्तान को अपना कार्यक्षेत्र बनाया, किंतु यहां पर उनके कहीं आने जाने से संबंधित कुछ पाबंदियां भी थीं।

1232 में शेख़ तूसी ने सुप्रसिद्ध कृति 'अख़लाख़ ए नासीरी' की रचना की जिससे पता चलता है कि शेख़ तूसी 1232 से पूर्व कोहिस्तान के दरबार से 'मुनसलिक' हो गए थे। अलामूत सहित अन्य किलों में इस्माइली शासकों के निमंत्रण पर नासिरुद्दीन तूसी अक्सर यात्रा करते थे। इस दौरान उन्होंने विभिन्न विषयों- दर्शन और गणित पर तथा असास अल इक़तिबास और रिसाला यीमु ईनिय्याह (खगोल शास्त्र पर) जैसे महत्वपूर्ण ग्रंथ लिखे जिससे उनकी ख्याति चीन तक पहुंच गई। 1256 में हलाकू ख़ान ने उत्तरी ईरान से इस्माइली शासन का अंत कर दिया और अलामूत के दुर्ग से नासिरुद्दीन तूसी को 'आज़ाद' कराया। हलाकू खान ने नासिरुद्दीन तूसी को अपना वैज्ञानिक सलाहकार नियुक्त करके धार्मिक कार्यों का प्रभारी बनाया। नासिरुद्दीन तूसी 1258 के बगदाद पर मंगोल आक्रमण के समय हलाकू के साथ थे जिसके आधार पर कट्टरसुन्नी विचारधारा नासिरुद्दीन तूसी को वह सम्मान नहीं देती जिसके वह हकदार हैं।

असग़र मेहदी
लखनऊ

खगोल शास्त्र में हलाकू खान की दिलचस्पी से लाभ उठाते हुए नासिरुद्दीन तूसी ने 1259 में माराग़ह की वैद्यशाला का निर्माण शुरू कराया और 1272 में इलखानी पंचांग संबंधित तालिकाए मुकम्मल कराईं। 1274 में नासिरुद्दीन तूसी की मृत्य हो गई, उन्हें इराक स्थित सातवें इमाम मूसा अल काज़िम के मकबरे के परिसर में दफन किया गया। एक बात को इंगित करना आवश्यक है कि नासिरुद्दीन तूसी के योगदान को अब्बासी खिलाफत से जोड़ना एक गलती है। नासिरुद्दीन तूसी ने विभिन्न विषयों पर लगभग 150 ग्रंथ/पुस्तकें लिखी हैं जिसमें 25 फ़ारसी में हैं। त्रिकोणमिति पर एक ग्रंथ तो अरबी-फारसी और तुर्की में लिखा है, जो नासिरुद्दीन तूसी का तीनों भाषाओं पर अधिकार को प्रदर्शित करता है और इसके अतिरिक्त ग्रीक भाषा पर भी उनको अधिकार हासिल था। गणित संबंधित ऑटोलयकस, ऐरिसटारकस, युक्लिड, अपोलोनीयस, आर्किमीडीज, हिपसीसिलस, थेयोडोसियस, मेनेलॉस और टॉलमी के कार्य एवं सिद्धांत पर टीका के साथ अपने मूल विचारों पर आधारित पर बहुत से ग्रंथ लिखे जिसमें जवामिल अल हिसाब अल तख्त वा तुराब, अल रिसाला अल शफ़ीया, कशफ़ अल क़ीना फ़ी असरार शक्ल अल क़िता मुख्य हैं। अल किता का लैटिन में अनुवाद किया गया जिसने रिगियोमोनटैनस को मुख्य रूप से प्रभावित किया।

लॉजिक पद्धति में गणितीय संकेतों का प्रयोग शेख़ तूसी ने शुरू किया, दर्शन में पदार्थ को वैज्ञानिक रूप में परिचित किया। माराग़ाह में कम्प्यूटशनल गणित पर काम शुरू हुआ जिसको तैमूरी काल के अल काशी इत्यादि ने आगे बढ़ाया। अल हिसाब में हिंदुस्तानी अंक, पास्कल त्रिभुज और अंकों के चौथे और उससे अधिक मूल (रूट) पर बुनियादी काम है। त्रिकोणमिति में शेख़ तूसी का कार्य बहुत ही महत्वपूर्ण है। यूक्लिड के पांचवे मान पर उनका अनुसंधान सफल नहीं रहा,लेकिन अज्यामितीय दृष्टिकोण सफल रहा।

फ़ारसी में खगोलशास्त्र से संबंधित लिखित ज़िज इल्ख़ानी (इल्ख़ानी सारणी) का अरबी, उसके बाद लैटिन में 1650 में लंदन से अनुवाद प्रकाशित किया गया। टॉलमी के सिद्धांत को शेख़ तूसी ने गलत साबित किया और ग्रह गति पर नवीन सिद्धांत प्रस्तुत किए जिसने जियो-सटेशनरि सिद्धांत के स्थान पर सूर्य पर आधारित सिद्धांत पेश किया,जो कोपरनिकस के द्वारा सामने आया। रसायन विज्ञान से संबंधित तानकसूख नामा (द बुक ऑफ प्रीसियस मेटल्स) का बयान जरूरी है। इसमें चार चैप्टर हैं, प्रथम में यौगिक मिश्रण पर, दूसरे में गहने, तीसरे में धातुओं और चौथे में परफ्यूम्स पर गहन विवरण है। शेख तूसी ने इबने सीना के काम को आगे बढ़ाया,लेकिन मेडिसन के क्षेत्र में उनकी दिलचस्पी अधिक प्रतीत नहीं होती। शेख़ तूसी ने इवेल्यूशन का प्रारंभिक कॉन्सेप्ट भी पेश किया। शेख़ तूसी का प्रभाव यूरोप से लेकर एशिया तक महसूस किया जा सकता है। राजा जय सिंह का जंतर-मंतर उनसे ही प्रभावित है। इमामिया शिया में शेख तूसी को एक थिलोजियन की हैसियत उनकी तजरीद की वजह से प्राप्त है जिसमें शिया कलाम पर व्यवस्थित काम किया गया है। हकीकत यह है कि इस्लाम के इतिहास में शेख तूसी जैसा बहुमुखी विद्वान शायद ही कोई पैदा हुआ हो। शेख़ तूसी के याद में एक छोटे ग्रह 10269 का नाम उनके नाम पर रखा है। इसके अतिरिक्त चंद पर 60 किमी व्यास के एक क्रेटर का नाम भी उनके नाम पर है।

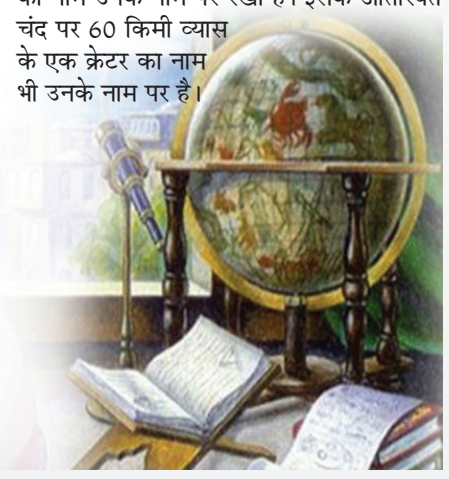

इतिहास के झरोखे से

पंचाल राज्य का गौरवशाली इतिहास

प्रो. गिरिराज नन्दन
इतिहासकार, आंवला, बरेली

पंचाल प्रदेश (महाजनपद) की राजधानी अहिच्छत्र

प्राचीन काल में बड़े नगर संस्कृति का केन्द्र होने के साथ-साथ अधिकतर राज्यों की राजधानी भी होते थे। उनके नाम पर राज्यों के नाम भी प्रसिद्ध हो जाते थे। अहिच्छत्र भी इसी प्रकार का बड़ा नगर था तथा महाभारत काल में अहिच्छत्र जनपद अथवा राज्य से भी जाना जाता था। वैसे जिस राज्य या जनपद की यह राजधानी था वह पंचाल कहलाता था। 'अहिच्छत्र' प्राचीन काल में भारतीय संस्कृति के प्रारंभिक विकास का क्षेत्र रहा है। आर्य संस्कृति का प्राचीन काल में पंचनद प्रदेश (पंजाब) से आगे विस्तार हुआ तब हस्तिनापुर, काम्पिल्य, मथुरा एवं अहिच्छत्र को उन्होंने अपना केन्द्र बनाया। धीरे-धीरे यह नगर बड़े नगरों का रूप लेते गए जिनमें कला राजनीति, धर्म, दर्शन एवं साहित्य आदि का विकास हुआ। अन्य नगरों की भांति अहिच्छत्र का भी योगदान भारतीय इतिहास में अनेक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। अहिच्छत्र नगर के अबशेष आंवला तहसील जिला बरेली, उ. प्र. जैन मंदिर के सामने टीलों के रूप में बिखरे पड़े हैं। यहां नगर प्रारंभ से लेकर सातवीं शताब्दी के समृद्धिशाली पंचाल (महाजनपद) का राजधानी नगर रहा। सातवीं शताब्दी से पंचाल राज्य का अस्तित्व समाप्त हो गया,लेकिन अहिच्छत्र अपने वैभवशाली रूप में ग्यारहवीं शताब्दी तक रहा तथा इस काल में यह कन्नौज साम्राज्य का अंग था।

अहिच्छत्र नगर का स्वरूप

प्राचीन अहिच्छत्र नगर के जिला बरेली (उ.प्र.) के आंवला नगर से 12 किमी दूर शाहबाद रोड के किनारे जैन मंदिर के सामने लगभग 5.60 किमी में फैले हुए (खंडहर) अवशेष पड़े हैं। स्थानीय लोग इसे पांडव किला अथवा आदिकोट अथवा अहिच्छत्र किला कहते हैं। इसके खंडहरों से मालूम होता है कि अपने राजधानी काल में यह किला अत्यंत भव्य रूप में रहा होगा। यहां की खुदाइयों के पश्चात् उत्खनन विद्वानों के अनुसार ऐसा प्रतीत होता है कि यह प्राचीन नगर आयताकार आकृति में बसा था। इसका ईंटों का परकोटा स्पष्ट रूप दिखाई देता है जिसका घेरा लगभग 5.60 किमी में है। इसके चारों ओर एक दीवार तथा जल पूर्ण खाई थी। चारों दिशाओं में दीवार के मध्य एक-एक दरवाजा था जिसे द्वार प्रकोष्ठ कह सकते हैं। बाहर से आने वालों को खाई पार करके द्वार तक पहुंचने के लिए पुलिया बनी हुई थी। ऐसा प्रतीत होता है कि नगर के बाहर भी भवन अथवा आबादियां प्राचीन काल में थीं,क्योंकि अहिच्छत्र के कोट के बाहर तथा आलमपुर, नसरतगंज, लच्छिमपुर आदि ग्रामों में ऊंचे-ऊंचे टीले अब भी पड़े हुए हैं। ग्राम जगन्नाथपुर में एक झील का परकोटा तथा ईंटों के टीले मौजूद हैं।

अहिच्छत्र-अहिच्छत्रा, छत्रवती, आदि-कोट एवं अहिक्षेत्र नाम से भी प्रसिद्ध इस कोट के विषय में जनश्रुति है कि इसे राजा आदि ने बनवाया था। कहते हैं कि यह राजा अहीर था। एक दिन वह किले की भूमि पर सोया हुआ था तब उसके ऊपर एक नाग ने उसकी छाया कर दी थी। पांडवों के गुरु द्रोणाचार्य ने उसे इस अवस्था में देखकर भविष्यवाणी की कि किसी दिन यह यहां का राजा बनेगा। कहते हैं कि उनकी यह भविष्यवाणी सही निकली। उसके नाम के आधार पर यह किला आदि कोट, आदि क्षेत्र अथवा अहिक्षेत्र कहलाया।

अहिच्छत्र नाम क्यों पड़ा?

पार्श्वनाथ भगवान के ऊपर अहि (सर्प) द्वारा छत्र बनने के कारण अहिच्छत्र नाम प्रसिद्ध - जैनअनुश्रुति- जैन ग्रंथों में अहिच्छत्र का उल्लेख बहुत आया है। सूरि रचित विविध तीर्थ कल्प में इस नगर का पुराना नाम संख्यावती मिलता है। जैन साहित्य के अनुसार साधिक चार मास की आत्म शोधनार्थ की गई तप साधना के मध्य तीर्थंकर पार्श्वनाथ कुरु जनपद की महानगरी हस्तिनापुर पहुंचे। वहां पारण करके गंगा के किनारे-किनारे विहार करते हुए वह भीमाटवी नामक महावन में योग धारण कर कायोत्सर्ग मुद्रा में ध्यानस्य हो गए। इस अवस्था में वहां उन पर संवर नाम दुष्ट असुर ने भीषण उपसर्ग किए। नागराज धरणेन्द्र और उनकी पत्नी पद्मावति ने उक्त विविध भयंकर उपसर्गों का निवारण करने का प्रयत्न किया। नागराज अहि ने भगवान के सिर के ऊपर अपने सहस्त्र फणों का वितान या छत्र बना दिया। स्वयं योगीराज पार्श्व तो शुद्धात्मक स्वरूप में लीन थे। उन्हें उक्त उपसर्गों का कोई भान नहीं था। उन्हें तभी केवल ज्ञान प्राप्ति हो गई। इस पुनीत स्थल से नातिदूर भीमाटवी वन के बाहर उत्तर पंचाल की राजधानी पंचालपुरी अपरनाम परिचक्रा एवं संख्यावती अवस्थित थी। भगवान पार्श्वनाथ के ऊपर अहि द्वारा छत्र बनने के कारण यह नगरी अहिच्छत्र नाम से लौक प्रसिद्ध हुई है।

लाल कुंवर से इम्तियाज महल तक का सफर

लाल कुंवर एक तवायफ थीं। वे मियां तानसेन के परिवार से आती थीं। उन्होंने गाने की बाकायदा तालीम ली थी। नृत्य पर भी उनकी पकड़ मजबूत थी। औरंगजेब उनके इसी गुण पर रीझ गया था। उसने लाल कुंवर को शाही सदस्य का दर्जा दिया था।

एस डी ओझा
इंजीनियर, बलिया

जब लाल कुंवर शाही महल से निकलतीं थीं तो उनके साथ सैनिकों की एक टुकड़ी चला करती थीं। उनका प्रभाव औरंगजेब पर इतना रुतबा था कि कई बार वह औरंगजेब के दिए गए आदेश को भी पलट देने की क्षमता रखती थीं। औरंगजेब की मौत के बाद उसके बेटे बहादुर शाह (प्रथम) और आजम शाह नकारा बादशाह साबित हुए थे। इसलिए उत्तराधिकार की लड़ाई अब औरंगजेब के पोतों में होने लगी जिसमें जहांदार शाह विजयी हुआ था। जहांदार शाह बहादुर शाह (प्रथम) का बेटा था।

जहांदार शाह जब रंगमहल में था तो उसे एक मधुर गायन की आवाज सुनाई दी थी। उस आवाज का पीछा करने पर उसे लाल कुंवर के दर्शन हुए थे। जहांदार ने लाल कुंवर को हर्षातिरेक में गोद में उठा लिया था। अब वह लाल कुंवर के साथ रहने लगा। उसने लाल कुंवर से शादी की और उसका नाम इम्तियाज महल रखा।

लाल कुंवर औरंगजेब की विरासत थीं। दादा की विरासत पोते ने संभाल ली। हांलाकि लाल कुंवर जहांदार शाह से उम्र में दोगुनी थी,लेकिन यहां 'दिल लगी दीवार से तो परी किस काम की' वाली कहावत चरितार्थ हुई थी। दादा खरीदे पोता बरते वाली बात हुई थी। यूं तो कहते हैं कि बाजार का सौदा बाप बेटे का साझा होता है,लेकिन यहां पर बात दादा और पोते की थी। दोनों ने इस सौदे को अपने-अपने समय में बिल्कुल अलग-अलग इस्तेमाल किया था।

जहांदार शाह पूरी तरह से लाल कुंवर के गिरफ्त में आ चुका था। दोनों मिलकर शराब पीते थे। एक दिन दोनों ने बाहर जाकर रात को जमकर शराब पी। वे बैलगाड़ी से आए। लाल कुंवर महल में सोने के लिए चली गई। जहांदार शाह बैलगाड़ी में ही रह गया। सुबह पता चला। जहांदार शाह बैलगाड़ी में पड़ा ठंड से कांप रहा था। जहांदार शाह लाल कुंवर की हर बात मानता था। उससे एक दिन लाल कुंवर ने दरबार में नंगे जाने को कहा था। जहांदार ने वैसा ही किया। परिणाम यह हुआ कि सारे दरबारी उससे नाराज हो गए। लाल कुंवर के कहने पर वह खुले में नहाने लगा। और तो और उसने लाल कुंवर के कहने पर यमुना नदी में एक यात्रियों से भरी एक नाव ही डुबवा दी थी। कारण था कि लाल कुंवर को डूबते यात्रियों की चीख पुकार बड़ी अच्छी लगती थी।

लाल कुंवर ने जहांदार शाह के दो बेटों को अंधा करके जेल में डलवा देने को कहा था। वह उनसे चिढ़ती थी। जहांदार ने लाल कुंवर की आदेश का बखूबी पालन किया। इतना सब होने के बाद जहांदार शाह को सभी नापसंद करने लगे थे। वह मात्र नौ महीने ही शासन कर पाया। उसके भतीजे फर्रुख सियर ने तंग आकर उसकी हत्या करवा दी थी। लाल कुंवर को एक कोठरी में रहकर शेष जीवन बीतानी पड़ी थी। जब वह मरी तो उसे लाल महल के इलाके में दफना दिया गया था।

कानपुर का कश्मीरी कौल परिवार

कानपुर में सबसे पुराना कश्मीरी परिवार राजा शिवनाथ सिंह कौल का परिवार माना जाता है। लखनऊ में नवाबी शासन में शहर कोतवाल राजा दिलाराम कौल थे जिनकी बारादरी लखनऊ के चौपटिया मुहल्ले में मशहूर है। उसके पुत्र राजा शिवनाथ कौल ने कानपुर के बढ़ते व्यापार व समृद्धि के कारण काहूकोठी में 5000 रुपये में एक कोठी खरीदी,जो राजा के फाटक के नाम से प्रसिद्ध हुई। सन् 1840 में कायम की गई यह कोठी 1990 तक रही। अब वहां पर नई मार्केट रानी बाजार के नाम से बना दी गई है। राजा शिवनाथ कौल के कोई संतान नहीं थी। अतः कानपुर के कश्मीरी मुंशी परिवार से पं. त्रिभुवन नाथ को गोद लिया। त्रिभुवन नाथ के भी संतान न होने पर मुंशी परिवार से श्याम सुंदर नाथ को गोद लिया गया। उन्हें भी राजा का खिताब प्राप्त हुआ था। सन् 1884 में जन्मे राजा श्याम सुंदर कौल का देहांत 1973 में हुआ। वह स्पेशल मजिस्ट्रेट भी रहे। राजा शिवनाथ ने कानपुर में गंगा के किनारे जेल के पीछे कश्मीरी घाट का निर्माण कराया था। राजा श्याम सुंदर कौल के पौत्र हरिमोहन नाथ व बृजमोहन नाथ कौल कानपुर में रहे।

अनूप कुमार शुक्ल
महासचिव इतिहास समिति, कानपुर

अवध के तालुकदारों की सूची के मुताबिक बेथर (उन्नाव) जो 1869 एक्ट के अनुसार सूची संख्या - 5 और दरबार नंबर-261,राजा शिवनाथ सिंह को तालुकदार की सनद मिली थी। 1935 में कबिज तालुकदार के नाम मे पंडित श्याम सुंदर नाथ कौल का नाम दर्ज मिलता है।

बेथर तालुका की सनद पूर्व में राजा महिपाल सिंह को मिली थी। बाद में इसी वंश में राजा चन्द्रिका बख्श सिंह हुए, जिन्होंने 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में हिस्सा लिया। अतः अंग्रेजों ने तालुका को जब्त कर लिया। बाद में जब्तशुदा तालुका कश्मीरी पंडितों (कौल परिवार) ने खरीद लिया। इस वंश के लोग चौपटिया, बारादरी दिलाराम, लखनऊ और कानपुर में भी रहते हैं। बेथर में आज भी राजा साहब का फाटक और महल के ध्वंसावशेष बाजार के पास विद्यमान है।

दिल्ली के सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी का राज्यारोहण

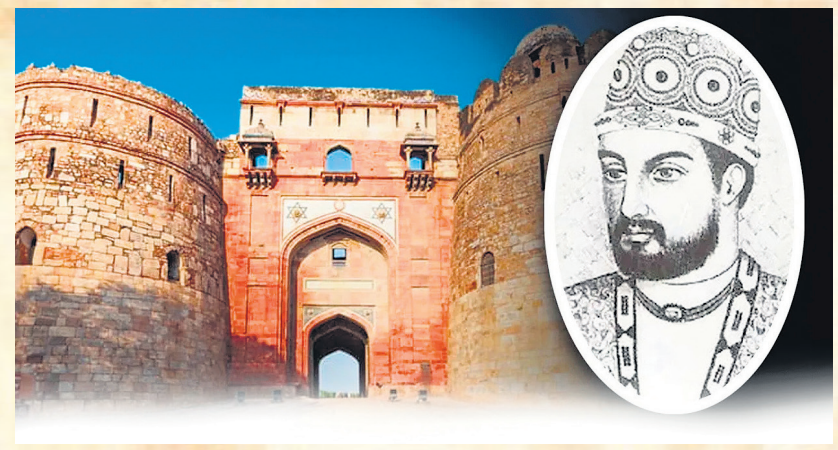

अलाउद्दीन खिलजी अपने चाचा जलालुद्दीन खिलजी के शासनकाल में कड़ा मानिकपुर का जागीरदार था। उसकी आकांक्षा दिल्ली का संप्रभु सुल्तान बनने की थी, वह राजनीति में धन के महत्व को जानता था। उसने सुल्तान जलालुद्दीन जो उसे अपने बेटे से बढ़कर मानता था को संज्ञान में लिए बिना देवगिरी पर आक्रमण किया। देवगिरी का राजा रामचंद्र था,किंतु उसका बेटा सिघन राज्य की समस्त सेना लेकर दक्षिणी सीमा पर युद्ध में व्यस्त था।

अलाउद्दीन ने देवगिरी पहुंचते ही खबर फैला दी कि वह महज एक जागीरदार है,पीछे दिल्ली सुल्तान की बहुत बड़ी फौज आ रही है। सिघन शीघ्रता से वापस आ गया और युद्ध शुरू हो गया। अलाउद्दीन ने एक आरक्षित सैन्य टुकड़ी पीछे रख छोड़ी थी। जैसे ही उसकी सेना कमजोर पड़ने लगी उसने आरक्षित सेना को हमले का संदेश पहुंचाया। आरक्षित सेना के मैदान में उतरते ही यह खबर फैला दी गई कि दिल्ली की बड़ी सेना आ पहुंची है। देवगिरी के सैनिक मैदान छोड़कर भाग खड़े हुए,राजा रामचंद्र देव राय ने अलाउद्दीन को प्रतिवर्ष कर देने की बात स्वीकार कर ली। अलाउद्दीन बहुत सारा सोना-चांदी लेकर इलाहाबाद वापस आ गया। धन की अधिकता संप्रभु होने की तरफ बढ़ाती है। दिल्ली दरबार के मंत्रियों विशेषकर मलिक अहमद चाप ने सुल्तान को आगाह किया, किंतु सुल्तान के ऊपर ममता का पर्दा आ पड़ा था। उसने अलाउद्दीन को दिल्ली आने का न्योता दिया,किंतु अलाउद्दीन ने यह कहते हुए आने से मना कर दिया कि उसे सुल्तान का डर है,क्योंकि उसने देवगिरी पर बिना बताए हमला किया था। प्रतिउत्तर में उसने सुल्तान को इलाहाबाद आने का न्योता दिया जिसे सुल्तान ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। दरबार के मंत्रियों ने पुनः सुल्तान को आगाह किया,किंतु सत्तर वर्षीय सुल्तान भतीजे की बातों से भावविहल था।

डॉ.विकास खुराना
शाहजहांपुर

जब वह रायबरेली तक पहुंचा तो अलाउद्दीन के इशारे पर नुसरतशाह ने उसे नदी के रास्ते चलने की सलाह दी जबकि शेष सेना को जमीन के रास्ते ही इलाहाबाद पहुंचना था। मलिक अहमद चाप ने इस प्रस्ताव का घोर विरोध किया,किंतु सुल्तान जलाउद्दीन का भाग्य अब विपरीत हो चला था। वह अपने दो अंगरक्षकों के साथ नाव में बैठकर इलाहाबाद की तरफ बढ़ा। उसका स्वागत करने स्वयं अलाउद्दीन मौके पर मौजूद था,भाग्यलक्ष्मी उसके पास आने को बेकाबू थी। गले मिलकर जब दोनों बग्घी की ओर चलने लगे तो अलाउद्दीन के ही इशारे पर एक सैनिक ने सुल्तान जलालुद्दीन का सिर काट लिया। इतिहासकारों ने लिखा कि सुल्तान के कटे सिर से आवाज आई, ए अलाउद्दीन! तूने यह क्या किया। उसके अंगरक्षक भी वही मार दिए गए। अभी सुल्तान के कटे हुए सिर से रक्त टपक ही रहा था कि शाही चंदोबा अलाउद्दीन के सिर पर रख दिया गया। वह शीघ्रता से दिल्ली की ओर बढ़ा, फौत (मृत्यु) हुए सुल्तान के परिवार वाले मुल्तान में थे। मार्ग में अलाउद्दीन देवगिरी से मिली धन दौलत लोगों और सैनिकों में बांटता जा रहा था। दिल्ली पहुंच कर एक छुटपुट युद्ध के बाद वह सिंहासन पर जा बैठा,उसने सुल्तान के पुत्रों तथा परिवार वालों को कुछ समय कैद में रखने के बाद मरवा दिया। अलाउद्दीन के गद्दी पर बैठते ही दिल्ली सल्तनत की संप्रभुत लिप्सा जाग उठी। अगले बीस वर्ष ऐश्वर्य का संदेशा लेकर आए। मंगोलो के लगातार हमलों के माकूल जवाब दिए गए। पूरा दक्षिण भारत दिल्ली के घुड़सवार सैनिकों के पद तले रौंदा गया। धन तो इतना एकत्रित किया गया कि महमूद गजनवी द्वारा उत्तर भारत से एकत्रित की गई संपत्ति फीकी पड़ गई। व्यापारियों,किसानों,जागीरदारों पर कड़े प्रतिबंध लागू किए गए। दलालों और भ्रष्ट आचरण का समूल नाश किया गया। यहां तक कि खुंखार मंत्री वजीर मलिक कबूल उलूगखानी को दीवान ए रियासत के पद पर बिठाकर उसके बर्बर सहयोगी मलिक शरीफ काई को गल्ला मंडी का नियंत्रक बना दिया गया। तोले गए कुंतलों अनाज में से भी अगर कुछ ग्राम कम रह जाते तो उतना मांस व्यापारी के जिस्म से निकाल लिया जाता।

गुप्तचर विभाग का पुनः संगठन किया गया,जल्द ही खबर फैल गई कि सुल्तान की हुकूमत जिन्नातों पर है,जो उसे पल प्रतिपल की खबर पहुंचाते हैं। सुल्तान अलाउद्दीन अपने माथे पर हुकूमत के निशान लेकर पैदा हुआ था। भाग्य उसके साथ था, उसके चार वजीर उसके विचारों को अंजाम तक पहुंचाने को लालायित रहते थे। दिल्ली कोतवाल अलाउलमुल्क जो अपने समय का विद्वान व्यक्ति था,उसका मित्र था।